भाग पांच

वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया

वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया

इस अनुभाग में, आप ऑस्ट्रेलिया की संस्कृति, नवप्रवर्तनों और राष्ट्रीय पहचान के बारे में सीखते हैं। ऑस्ट्रेलिया व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में एक गतिशील साझेदार और एक सम्मानित विश्व नागरिक है। अपने देश के सतत विकास और नवीकरण में ऑस्ट्रेलियाई लोग नए-नए प्रवासियों के योगदान को मान्यता देते हैं।

भूमि

ऑस्ट्रेलिया दुनिया के सबसे पुराने भूभागों में से एक है. यह दुनिया का छठा सबसे बड़ा देश है और सबसे बड़ा द्वीप राष्ट्र है। यह बसी हुई भूमि में सबसे समतल और शुष्क भूमि भी है। अधिकांश ऑस्ट्रेलिया की मिट्टी ऊपजाई नहीं है और बारिश कम होती है, जिससे खेतीबाड़ी कठिन हो जाती है। शुष्क अंतःक्षेत्रों को आउटबैक कहा जाता है. और ये खासकर दूरस्थ हैं और यहाँ पर्यावरण बहुत कठिन है। ऑस्ट्रेलिया में, पानी एक बहुमूल्य संसाधन है।

इतना बड़ा देश होने के कारण, ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रों की जलवायु बहुत भिन्न-भिन्न है। ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में उष्णकटिबंधीय क्षेत्र हैं तो मध्य में मरुस्थल. दक्षिण में, पर्वतीय बर्फ के साथ जाड़े के अत्यंत ठंढे मौसम से लेकर गर्मी में लू के थपेड़े तक तापमान में परिवर्तन पाया जाता है।

छः राज्यों और दो मुख्य भूभागीय प्रदेशों के अलावा ऑस्ट्रेलिया की सरकार कुछ और प्रदेशों पर भी शासन करती है:

- ऐशमोर एवं कार्टियर द्वीप
- क्रिसमस द्वीप
- कोकोज (कीलिंग) द्वीप
- जर्विस बे टेरिटॉरी
- कोरल सी द्वीप
- ऑस्ट्रेलियाई-अंटार्कटिक प्रदेश में हर्ड द्वीप एवं मैकडोनाल्ड द्वीपसमूह
- नॉरफॉक द्वीप।

विश्व धरोहर स्थल

निम्नलिखित ऑस्ट्रेलियाई स्थल संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची में सूचीबद्ध हैं।

सांस्कृतिक

- ऑस्ट्रेलियाई कॉनविक्ट स्थल
- Budj Bim Cultural Landscape
- मेलबोर्न में Royal Exhibition Building and Carlton Gardens
- सिडनी ओपरा हाउस

सिडनी ओपरा हाउस

प्राकृतिक

- साउथ ऑस्ट्रेलिया और क्वींसलैंड में ऑस्ट्रेलियन फोसिल मेमल स्थल
- K'gari (पूर्व Fraser Island)
- ऑस्ट्रेलिया में Gondwana वर्षावन
- Great Barrier Reef
- Greater Blue Mountains Area
- Heard and McDonald Islands
- Lord Howe Island Group
- Macquarie Island
- Ningaloo Coast
- Purnululu नेशनल पार्क
- Shark Bay, Western Australia
- क्वींसलैंड के गीले कटिबंध

मिश्रित

- Kakadu National Park
- Tasmanian Wilderness
- Uluru-Kata Tjuta नेशनल पार्क
- Willandra Lakes Region.

Uluru-Kata Tjuta नेशनल पार्क में Ayers Rock के आधार पर लहर के आकार का रॉक गठन

उपरोक्त बताए पश्चिमी प्रतिमाओं और प्राकृतिक अजूबों के अतिरिक्त, पूरे देश में कई हज़ार पवित्र स्थल हैं जो आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के लिए महत्ता वाले स्थल हैं। ये स्थल ऑस्ट्रेलिया की सांस्कृतिक रचना के महत्वपूर्ण भाग हैं और सभी ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। पवित्र स्थलों को आम-तौर पर पैतृक कहानियों और विशाल भूदृश्यों का निर्माण करने, सांस्कृतिक मान्यताओं को अपनाने और सगे-संबंधियों के रिश्तों और सामाजिक सुरक्षा बनाए रखने में इनकी भूमिका से जोड़ा जाता है।

विशाल देश

आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों का भूमि से खास संबंध है। उन्होंने अपने पड़ोसियों से संपर्क रखने और उन्हें मिलने के लिए लंबी यात्राएँ करने को हमेशा मान्यता दी है। आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के 'गीतों की पंक्तियाँ' वे कहानियाँ हैं जो परंपरागत कानून, इतिहास और संस्कृति को भूगोल से जोड़ती हैं, जो पूरे ऑस्ट्रेलिया में अलग-अलग सांस्कृतिक और भाषाई समूहों में फैला हुआ है। इन्हें हज़ारों सालों से बनाए रखा और अमल में लाया जा रहा है।

ऑस्ट्रेलिया के कई भागों में, लोगों के पास सेवाओं तक सीमित पहुँच है, जैसे कि स्कूल, स्वास्थ्य सेवाएँ और दुकानें, जो अन्य ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए बहुत आसानी से सुलभ है। दूरस्थ समुदायों में रहने वाले लोगों का समर्थन करने के लिए हम मिलकर काम करते हैं। सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने सरलता और नवीनता से दूरस्थता की समस्याओं का समाधान करने में सहायता की है।

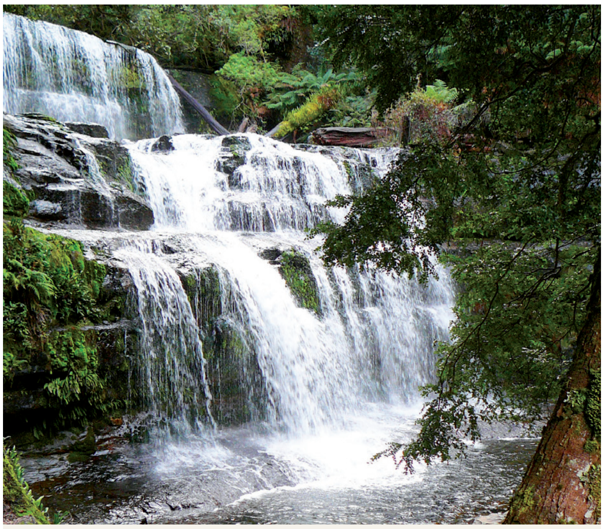

Tasmanian Wilderness

पेडल रेडियो

1929 में एडिलेड के अल्फ्रेड ट्रैगर Alfred Traegar], ने पांव से चलने वाले पहले रेडियो का अविष्कार किया. अपने पैरों से पैडल को दबाकर इसका उपयोग करने वाले लोग दोतरफा रेडियो का लाभ उठा सकते थे. अकेले रहने वाले गृही, दूरस्थ मिशन स्टेशन तथा आदिवासी समुदाय - सबने इस आविष्कार से लाभ उठाया. यह पैडल रेडियो ऑस्ट्रेलिया की दो बड़े काम की संस्थाओं की स्थापना में सहायक हुआ - रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस तथा दि स्कूल ऑफ दि एयर.

रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस

आदरणीय जॉन फ्लिन दूरस्थ समुदायों में रहे और वहाँ रहने वाले लोगों के साथ काम किया। यह उनका विचार था कि आउटबैक में रहने वाले रोगियों तक हवाई मार्ग से जितनी जल्दी संभव हो सके डॉक्टरों को लाया जाए। ऐसा करने के लिए, उन्हें सरकार, एयरलाइन Qantas और दानी संस्थाओं से मदद मिली। रॉयल फ्लाइगं डॉक्टर सविसर् 1928 में आरभं हईु परन्तु दूरस्थ क्षेत्र में अभी भी ऐसे लोग थे जो इस सेवा का लाभ नहीं उठा सकते थे। पैडल रेडियो आरभं किए जाने से यह तय हो गया कि एकाकी क्षत्रोमें रहने वाले लोग भी जल्द से जल्द डॉक्टर को बुलवा सकतेथे ।

दि स्कूल ऑफ दि एयर

1950 तक एकाकी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को या तो बोर्डिंग स्कूल जाना होता था या डाक द्वारा पाठ पूरा करने पड़ते थे (जैसा ऊपर तस्वीर में दिखाया गया है)। साउथ ऑस्ट्रेलिया में रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस के वाइस प्रेसिडेंट एडलेड माइथ्के ने महसूस किया कि फ्लाइंग डॉक्टर रेडियो सर्विस के माध्यम से घर बैठे बच्चों को अपने शिक्षकों से बात करने में भी सहायता मिल सकती है. 1948 में एलिस सिंप्रग्स Alice Springs], सर्विस ने इन दोतरफा पाठ्यक्रमों का प्रसारण आरंभ किया. एकाध साल बाद दि स्कूल ऑफ दि एयर की औपचारिक स्थापना हो गई. ऑस्ट्रेलिया के अनुभव से कई अन्य देशों को अपने खुद के समान कार्यक्रम बनाने में मदद मिली है।

पुराने पेडल रेडियो के स्थान पर हाई-फ्रीक्वेंसी रेडियो रिसिवर्स आए और अब इनके स्थान पर इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है। रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस एवं स्कूल ऑफ दि एयर आज भी ऑस्ट्रेलिया के दूरस्थ समुदायों में लोगों को लाभ पहुंचाते आ रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया की पहचान

ऑस्ट्रेलिया की पहचान को कई कारकों के आकार दिया है, जिनमें हमारी जनजातीय विरासत और संस्कृतियाँ, हमारे लोगों की विविधता, हमारा इतिहास, हर रोज़ हमारा मार्गदर्शन करने वाली मान्यताएँ, हमारी जीवनशैलियाँ और हमारे द्वारा प्रंशसा किए जाने वाले ऑस्ट्रेलियाई लोग शामिल हैं।

भाग 6, हमारी ऑस्ट्रेलियाई गाथा हमारे इतिहास को देखती है। यह ऑस्ट्रेलिया के औपनिवेशिक अतीत तथा आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के वर्तमान और हाल ही की परिस्थितियों से सम्बंधित मुद्दों को दर्शाती है। कहानी में ऑस्ट्रेलिया के विविध, बहुसांस्कृतिक समाज के मूल और प्रवृत्ति भी शामिल है और साथ ही युद्ध जैसी चुनौतियाँ भी शामिल हैं जिनका एक राष्ट्र के रुप में हमने मिलकर सामना किया है।

इस अध्याय का शेष भाग हमारे द्वारा अपनाए जाने वाली जीवनशैलियों और जिन लोगों की हम सराहना करते हैं, उनके बारे में है।

खेलकूद और मनोरंजन

बहुत से ऑस्ट्रेलियाई लोग खेलकूद पसन्द करते हैं और ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन किए हैं।

हमारे समस्त इतिहास में खेलकूद ने ऑस्ट्रेलिया के लोगों को एक विशेषता प्रदान की है और हमें एकता के सूत्र में पिरोया है. आबादियों के बसने के शुरुआती समय से ही खेलकूदों ने कठोर जीवन के यथार्थ से विश्रान्ति पाने का मार्ग दिखलाया. लड़ाई के दिनों में भी युद्धभूमि के तनाव को दूर करने के लिए ऑस्ट्रेलिया की प्रतिरक्षा सेना के सदस्यों ने खेलकूद की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया.

खेलकूद एक ऐसा सामान्य आधार भी उपलब्ध कराते हैं जहां खिलाड़ी और दर्शक दोनों ही स्वयं को सम्मिलित एवं एक ऐसी वस्तु का हिस्सा समझते हैं जो ऑस्ट्रेलिया के सामाज के लिए महत्वपूर्ण है। आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी तथा प्रवासी ऑस्ट्रेलियाई देश के सबसे सफल खिलाड़ियों में से हैं।

कई ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट, बॉस्केटबॉल, नेटबॉल और हॉकी जैसे टीम खेलों में भाग लेते हैं। सॉकर (फुटबॉल), रग्बी लीग, रग्बी युनियन और विशिष्ट रुप से ऑस्ट्रेलियन रुल्स फुटबॉल ('ऑसी रुल्ज') का ऑस्ट्रेलियाई खेल ऑस्ट्रेलिया में खेलने और देखने वाले बहुत लोकप्रिय खेल हैं। स्वीमिंग, टेनिस, एथलेटिक्स, गोल्फ, साइक्लिंग, बुशवॉकिंग, सर्फिंग और स्कींग भी लोकप्रिय मनोरंजनात्मक गतिविधियाँ हैं।

ऑस्ट्रेलिया को खास-तवर पर क्रिकेट के खेल में अपनी अंतर्राष्ट्रीय सफलताओं पर गर्व है। 19वीं सदी के अंत से ऑस्ट्रेलियाई एवं इंग्लिश क्रिकेट टीमों में गहन प्रतियोगिता चलती आ रही है।

'एक ऐसी रेस जिसे देखने के लिए देश ठहर जाता है' के नाम से जाना जाने वाला मेलबॉर्न कप दुनिया की सबसे बड़ी घुड़दौड़ों में से एक है। पहला मेलबॉर्न कप 1861 में आयोजित किया गया। मेलबॉर्न कप का आयोजन नवम्बर के पहला मंगलवार को किया जाता है और यह 1877 से विक्टोरिया में एक सार्वजनिक अवकाश का दिन बन गया है।

सर डोनाल्ड ब्रेडमैन [Sir Donald Bradman] (1908-2001)

सर डोनाल्ड ब्रेडमैन, महानतम क्रिकेट बैट्समैन, ऑस्ट्रेलिया के खेल-जगत की मशहूर हस्ती हैं। बोरैल [Bowral], न्यू साउथ वेल्स में पले-बढ़े डोनाल्ड ब्रेडमैन ने ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए अपना पहला क्रिकेट खेल 1928 में खेला.

वह बहुत फुर्तीले थे। 1930 में इंग्लैंड के अपने पहले दौरे के समय उन्होंने बल्लेबाजी के प्रायः सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए. 21 वर्ष के होते-होते वे ऑस्ट्रेलिया की एक मशहूर हस्ती बन चुके थे. 1948 में ब्रेडमैन के अंतिम दौरे के समय उनकी टीम "अजेय" [The Invincibles], के नाम से मशहूर हो गई क्योंकि वे इंग्लैंड के खिलाफ खेला गया कोई भी मैच नहीं हारे।

कला

ऑस्ट्रेलिया का एक जीवंत कला परिवेश है जिसमें देश की आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की सांस्कृतिक परंपराएँ शामिल हैं। ऑस्ट्रेलिया के विजुअल और प्रदर्शन करने वाले कलाकार, जिसमें फिल्म, कला, थिएटर, संगीत और नृत्य शामिल हैं, यह ऑस्ट्रेलिया और विदेश दोनों में व्यापक तौर पर प्रशंसित हैं।

साहित्य

ऑस्ट्रेलिया की साहित्यिक परम्परा सुदृढ़ रही है। इसकी शुरुआत आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों लोगों के कथावाचन से हुई तथा जो 18वीं सदी के अंतमें आरोपित अपराधियों के यहां पहुंचने पर उनकी मौखिक कथाओं के साथ जारी रही.

ऑस्ट्रेलिया का बहुत सारा आरंभिक लेखन बुश क्षेत्रों तथा उस कठिन पर्यावरण में जीवन की कठिनाइयों के बारे में है। हेनरी लॉसन [Henry Lawson], तथा माइल्स फ्रेंकलिन [Miles Franklin], जैसे लेखकों ने बुश जीवन तथा ऑस्ट्रेलिया की जीवन-शैली के बारे में कविताएं और कहानियां लिखीं हैं.

अन्य सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई लेखकों में शामिल हैं: Peter Carey, Colleen McCullough, Sally Morgan, Tim Winton, Tom Keneally तथा Bryce Courtenay ।

Judith Wright (ज्युडिथ राइट) (1915-2000)

ज्युडिथ राइट एक उल्लेखनीय कवयित्री, पर्यावरण संरक्षणवादी एवं आदिवासी अधिकारों के लिए जूझने वाली महिला थी। अपनी कविताओं में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और इसके लोगों के प्रति अपने प्रेम का इजहार किया है. उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें साहित्य के लिए विश्वकोश ब्रिटैनिका पुरस्कार तथा कविता के लिए क्वीन्स गोल्ड मेडल शामिल हैं. वे ऑस्ट्रेलियन कंजर्वेशन कमेटी (ऑस्ट्रेलियाई संरक्षण समिति) तथा एबारिजिनल ट्रीटी कमेटी (आदिवासी सन्धि समिति) की एक सदस्य भी रहीं.

ज्युडिथ राइट को एक कवयित्री के तौर पर उनके कौशल और ऑस्ट्रेलियाई साहित्य और सामाजिक तथा पर्यावरणीय संशोधन को आगे बढ़ाने के लिए याद किया जाता है।

थिएटर एवं फिल्म

ऑस्ट्रेलियाई नाटकों, फिल्मों एवं फिल्म-निर्माताओं को देश-विदेश में जाना-माना जाता है. Cate Blanchett, Geoffrey Rush, Nicole Kidman और Hugh Jackman जैसे ऑस्ट्रेलियाई अभिनेताओं तथा Peter Weir और Baz Luhrmann जैसे फिल्म निर्माताओं ने फिल्मों में उत्कृष्टता के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

विजुअल आर्ट

आस्ट्रेलियाई कला के सर्वाधिक सुपरिचित कार्य हैं जनजातीय चित्र एवं Tom Roberts, Frederick McCubbin एवं Arthur Streeton चित्रकारों के 19वीं सदी के बुश (झाड- झंखाड) परिदृश्य। 20वीं सदी के मध्य में Russell Drysdale तथा Sidney Nolan जैसे कलाकारों ने प्रवल रंगमे आउटबैक जीवन की कठोरता का चित्रण किया। हाल ही में अपनी विशिष्ट और सुसपष्ट शैली के कारण Brett Whiteley ने अतंराष्ट्रिट्य सराहना प्राप्त की हैं । जनजातीय कला, जिसमें Albert Namatjira, Emily Kame Kngwarreye, Gloria Petyarre, Rover Thomas और Clifford Possum Tjapaltjarri की कलाएँ शामिल हैं, इनकी ऑस्ट्रेलिया और विदेश में अधिक से अधिक मांग है।

संगीत और नृत्य

सबसे तुरंत पहचान की जाने वाली ऑस्ट्रेलियाई संगीत की ध्वनि डिगरिडू (didgeridoo) की है, जो प्राचीन जनजातीय यंत्र है।

ऑस्ट्रेलिया के लोगों ने संगीत के सभी क्षेत्रों को अंगीकृत किया है और उनमें उत्कृष्टता हासिल की है तथा शास्त्रीय, लोक एवं रॉक संगीत में योगदान के लिए उनकी एक अंतर्राष्ट्रीय पहचान है।

सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई संगीतकारों में शामिल हैं Kylie Minogue, Jimmy Barnes, Paul Kelly, Olivia Newton-John, John Farnham, Nick Cave, और जनजातीय कलाकार Archie Roach, Gurrumul और Jessica Mauboy. ऑस्ट्रेलियाई बैंड जैसे कि AC/DC और INXS को पसंद करने वाले लोग विश्व भर में हैं।

Sir Robert Helpmann, Meryl Tankard, Stephen Page, और Li Cunxin जैसे महान नतर्को और कोरियोग्राफरों के प्रयास से आस्ट्रेलियाई निर्तय फला-फूला हैं। Bangarra एक आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी नृत्य कंपनी है, जिसे नृत्य, साउंडस्केप, संगीत और डिज़ाइन में विशिष्ट शैली के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक तौर पर व्यापक तौर पर ख्याती प्राप्त है।

वैज्ञानिक उपलब्धि और आविष्कार

चिकित्सा, तकनीकी, कृषि, खनन एवं निर्माण के क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया के लोगों के पास वैज्ञानिक उपलब्धियों एवं विकास का एक मजबूत लेखा-जोखा है.

विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए अनुसन्धान के कारण कई ऑस्ट्रेलियाई लोगों को नोबल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है.

वैज्ञानिक उपलब्धियां हासिल करने वालों को 'ऑस्ट्रेलियन ऑफ़ दि इयर एवाड्र्स' भी मिले हैं. 2005 में यह एवार्ड प्रोफेसर फायोना वुड [Professor Fiona Wood], को दिया गया जिन्होंने आग से झुलस जाने वाले लोगों के लिए 'स्प्रेऑन' त्वचा का विकास किया. 2006 में यह पुरस्कार प्रोफेसर आयन फ्रेजर [Professor Ian Frazer] को दिया गया जिन्होंने गर्भाशय के कैन्सर के लिए वैक्सीन (टीका) तैयार की. 2007 में यह एवार्ड पाने वाले व्यक्ति थे - एक अग्रणी पर्यावरण विज्ञानी प्रोफेसर टिम फ्लैनरी [Professor Tim Flannery].

प्रोफेसर वुड [Professor Wood], एवं प्रोफेसर फ्रेजर [Professor Frazer], दोनों ही ब्रिटेन से ऑस्ट्रेलिया आए थे. प्रोफेसर फ्रेजर [Professor Frazer], के सह-आविष्कारक थे स्वर्गीय डॉ. जियान झाउ [Dr Jian Zhou], जो चीन से आकर ऑस्ट्रेलिया के नागरिक बन गए थे।

Dr Fiona Wood AM (1958 में जन्म हुआ)

Dr Wood ऑस्ट्रेलिया के सबसे नवप्रवर्तनशील और सम्मानित सर्जन और खोजकर्ताओं में से एक हैं। अत्यधिक कौशल-प्राप्त प्लास्टिक और रिकंस्ट्रक्टिव सर्जन और विश्व-अग्रणी बर्नस स्पेशलिस्ट, उन्होंने बर्नस (आग से जलने से सम्बन्धित) दवाईयों में अनुसंधान और टैकनॉलजी विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है।

2002 की बाली बमबारी के पीड़ितों के साथ उनके काम करने के पश्चात, Dr Wood को 2003 में Member of the Order of Australia से सम्मानित किया गया। बर्नस देखरेख में उनके योगदान की उस समय पहचान की गई जब उन्हें 2005 में ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि ईयर की उपाधि दी गई।

प्रोफेसर फ्रेड हॉलोज [Professor Fred Hollows] (1929- 1993)

प्रोफेसर फ्रेड हॉलोज एक उत्साही नेत्ररोग विशेषज्ञ थे जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया एवं विकासशील देशों में दस लाख से भी अधिक लोगों की दृष्टि वापस लाने में सहायता की. फ्रेड हॉलोज का जन्म न्यूज़ीलैंड में हुआ था. 1965 में वे ऑस्ट्रेलिया आए थे और बाद में सिडनी के एक अस्पताल में नेत्र विभाग के विभागाध्यक्ष बन गए.

उन्हें लोगों की समानता में दृढ़ विश्वास था और उन्होंने प्रथम एबारिजिनल मेडिकल सर्विस (आदिवासी चिकित्सा सेवा) की स्थापना में सहायता दी, जो अब पूरे ऑस्ट्रेलिया में कई सेवाएँ हैं।.

1980 आते-आते विकासशील देशों में नेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रमों की स्थापना के लिए फ्रेड हॉलोज दुनिया भर की सैर कर रहे थे।. अप्रैल 1989 में वे ऑस्ट्रेलिया के नागरिक बन गए

प्रोफेसर हॉलोज के नेक काम फ्रेड हॉलोज फाउंडेशन [Fred Hollows Foundation] के माध्यम से आज भी जारी हैं.

ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि इयर

1960 से अब तक, दि ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि इयर एवार्डस प्रमुख ऑस्ट्रेलियाई लोगों की उपलब्धियों और उनके योगदान को रेखांकित करते आए हैं. इस एवार्ड के लिए कोई भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति को नामांकित कर सकता है

ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि इयर वे लोग होते हैं जिन्होंने अपने कार्य में उत्कृष्टता हासिल की है और देश की सेवा की है. वे ऑस्ट्रेलिया को बेहतर बनाने में अपना योगदान देने के लिए हमें प्रेरणा और चुनौति देते हैं\

इन एवार्ड्स में शामिल हैं: यंग ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि इयर, सीनियर ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि इयर तथा ऑस्ट्रेलिया के लोकल हीरो.

वर्तमान और भूतपूर्व प्राप्तकर्ताओं की सूची www.australianoftheyear.org.au पर उपलब्ध है।

Dr James Muecke AM

आँखों के सर्जन और नेत्रहीनता की रोकथाम के अग्रणी2020 ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि ईयर

Dr Muecke, Sight For All के सह-संस्थापक हैं, एक दान संस्था जिसका उद्देश्य अनुसंधान, शिक्षा, मूलभूत सुविधा और सहभागी देशों में सहकर्मियों के प्रशिक्षण के द्वारा नेत्रहीनता को मिटाना है।

Dr Muecke का मानना है कि नेत्रहीनता एक मानवाधिकार का मुद्दा है और वह एक ऐसे विश्व का निर्माण करने के लिए काम कर रहे हैं जहाँ हर कोई आँखों से देख सकता हो।

Professor Michelle Simmons (1967 में जन्म हुआ)

क्वांटम फिजिक्स में प्रोफैसर, 2018 ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि ईयर

Professor Simmons परमाणु इलेक्ट्रोनिक्स और क्वांटम कंप्यूटिंग में अग्रणी हैं। जिसकी व्याख्या वह "कंप्यूटिंग युग में अंतरिक्ष दौड़" के तौर पर करती हैं, उसमें सबसे आगे, Professor Simmons का लक्ष्य एक ऐसे क्वांटम कंप्यूटर का निर्माण करना है जो उन समस्याओं का समाधान मिनटों में करने में सक्षम हो जिनका समाधान करने में अन्यथा हज़ारों साल लगें। ऐसे आविष्कार में दवाईयों के निर्माण, मौसम के अनुमान, गाड़ियों के स्वचालित होने, आर्टिफिशिएल इंटेलिजेन्स (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) तथा और भी बहुत क्षेत्रों में क्रांति लाने का सामर्थ्य है।

2018 में, Professor Simmons को क्वांटम सूचना विज्ञान में उनके काम और समर्पण के लिए ऑस्ट्रेलियन ऑफ दि ईयर की उपाधि दी गई थी। 2019 में, "क्वांटम और परमाणु इलेक्ट्रॉनिक्स में एक अग्रणी और एक प्रेरणास्त्रोत के तौर पर विज्ञान शिक्षा में उनकी उत्कृष्ट सेवा" को पहचान देते हुए उन्हें Officer of the Order of Australia नियुक्त किया गया था।

ऑस्ट्रेलियन मुद्रा

हमारी मुद्रा पर ऐसे लोग एवं प्रतीक-चिह्न चित्रित किए गए हैं जो ऑस्ट्रेलिया के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं।

हमारी मुद्रा पर दर्शाए जाने के लिए जिन हस्तियों को चुना गया है, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने समाज-सुधार, विज्ञान, राजनीति, सैन्य उपलब्धियों एवं कला आदि के क्षेत्रों में नई सूझ-बूझ और प्रतिभा का परिचय दिया है।

क्वीन एलिज़ाबेथ II (1926-2022)

क्वीन एलिज़ाबेथ II ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रप्रमुख थीं। वह ऑस्ट्रेलिया और यूनाइटेड किंगडम की रानी थीं। अपने लंबे और लोकप्रिय शासनकाल के दौरान उनकी मजबूत, स्थिर उपस्थिति रही।

संसद भवन और फ़ॉरेकोर्ट मोज़ेक

संसद भवन की योजनाबद्ध योजना डिज़ाइन विकास भूदृश्य योजना पर आधारित थी, जिसे संसद भवन निर्माण प्राधिकरण द्वारा प्रदान किया गया था। फ़ॉरेकोर्ट मोज़ेक सेंट्रल डेजर्ट डॉट-स्टाइल पेंटिंग पर आधारित है जिसे Michael Nelson Jagamara ने बनाया है और जिसका शीर्षक 'Possum and Wallaby Dreaming' है।

Dame Mary Gilmore (1865–1962)

डेम मेरी गिलमोर (Dame Mary Gilmore) एक लेखिका, पत्रकार, कवयित्री तथा समाज-सुधारक थीं। उन्हें उनके लेखन तथा महिलाओं, गरीबों तथा आदिवासी व टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के पक्षधर के रूप में याद किया जाता है।

'Banjo' Paterson (1864–1941)

ऐन्ड्रू बार्टन पैटरसन; (Andrew Barton Paterson) एक कवि, गीतकार और पत्रकार थे। उन्होंने 'बैंजो' पैटरसन उपनाम से लिखा तथा उन्हें ऑस्ट्रेलिया के सबसे लोकप्रिय लोकगीत 'वाल्टिंज़ग मैटिल्डा' के लिए याद किया जाता है।

आदरणीय जॉन फ्लिन (1880-1951)

आदरणीय जॉन फ्लिन (Reverend John Flynn) ने दुनिया की पहली हवाई चिकित्सा-सेवा आरंभ की - ऑस्ट्रेलिया की 'दि रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस' ऑस्ट्रेलिया के दूरस्थ क्षेत्रों में चिकित्सा-सेवा उपलब्ध करा के अनेक लोगों की जीवन-रक्षा करने के कारण वे स्मरणीय हो गए हैं।

Mary Reibey (1777-1855)

मेरी रेबी (Mary Reibey)न्यू साउथ वेल्स कॉलोनी में व्यवसाय स्थापित करने वाली पहली महिला थीं. एक किशोर नवयुवती आरोपी के रूप में ऑस्ट्रेलिया आने के बाद वह समुदाय की एक प्रतिष्ठित नेता बन गई.

Edith Cowan (1861-1932)

एडिथ कॉवेन (Edith Cowan)एक सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता और महिलावादी थीं. ऑस्ट्रेलिया के किसी भी संसद में चुनी जाने वाली वो पहली महिला थीं.

डेविड युनैपॉन ; (David Unaipon) (1872 – 1967)

डेविड युनैपॉन ; (David Unaipon)एक लेखक, लोकवक्ता और आविष्कारक थे. उन्हें विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदानों एवं आदिवासी तथा टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की स्थिति सुधारने के लिए किए गए प्रयासों के लिए याद किया जाता है.

Sir John Monash (1865-1931)

सर जॉन मोनैश (Sir John Monash)एक इंजीनियर, प्रशासक एवं ऑस्ट्रेलिया के महानतम सैन्य कमांडरों में से एक थे. उन्हें उनकी नेतृत्व-क्षमता, बुद्धिमत्ता और वाक-कुशलता के लिए स्मरण किया जाता है.

Dame Nellie Melba (1861 – 1931)

डेम नेली मेल्बा Dame Nellie Melba एक विश्व-प्रसिद्ध सप्रानो (एक प्रकार की गायिका) थीं. दुनिया भर में 'गीतों की मलिका' के नाम से विख्यात वो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने वाली पहली ऑस्ट्रेलियाई गायिका थीं.

राष्ट्रीय दिवस एवं समारोह

ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अवकाश यूरोपीय उपनिवेश के बाद से हमारे इतिहास के जश्नों और उपलब्धियों को दर्शाते हैं।

निर्धारित तिथियां

- **नववर्ष - 1 जनवरी को** नववर्ष का दिन नए वर्ष के आरंभ का उत्सव के तौर पर मनाया जाता है।
- **26 जनवरी को ऑस्ट्रेलिया** दिवस यह सोच-विचार करने का समय है कि ऑस्ट्रेलियाई होने का क्या अर्थ है, और यह समकालीन ऑस्ट्रेलिया का जश्न मनाने और हमारे साझे इतिहास की अभिस्वीकृति करने का दिन है। यह दिनांक 1788 में सिडनी कोव पर फर्स्ट फ्लीट (पहले बेड़े) के आने की वर्षगांठ को दर्शाती है।
- **25 अप्रैल को ऐनज़ैक डे विश्व युद्ध** 1 के दौरान Gallipoli पर ऑस्ट्रेलियाई और न्यूज़ीलैंड सैन्य दल (ANZAC) के आने की वर्षगांठ को दर्शाता है। यह एक गंभीर दिवस है जब हम युद्ध, संघर्ष और शांति-रक्षा के लिए शहीद हुए सभी ऑस्ट्रेलियावासियों के बलिदानों को याद करते हैं। हम सभी पुरुष और महिला सैनिकों के हौसले और वचनबद्धता का सम्मान भी करते हैं, और युद्ध के भिन्न-भिन्न अर्थों पर विचार करते हैं।
- **25 दिसम्बर को क्रिसमस दिवस** ईसा मसीह के जन्म-दिवस पर उपहारों के आदान-प्रदान का ईसाई समारोह है।
- **26 दिसम्बर को बॉक्सिंग** डे क्रिसमस-उत्सव का ही एक अंग है।

परिवर्तनीय तिथियां

- **मजदूर दिवस या एट आवर डे** ऑस्ट्रेलिया के श्रमिकों द्वारा काम के आठ घंटे तय कराने में सफलता पाने का उत्सव है - दुनिया में पहला ऐसा उत्सव।
- **ईस्टर** ईसा मसीह की मृत्यु और पुनर्जिवित होने की घटना की याद में ईसाई उत्सव है।
- **राजा का जन्मदिन** ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रप्रमुख, राजा चार्ल्स तृतीय के जन्म का जश्न मनाता है। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया और क्वींसलैंड को छोड़कर बाकी सभी राज्यों और प्रदेशों में यह उत्सव जून माह के दूसरे सोमवार को मनाया जाता है।

अन्य सार्वजनिक अवकाश

अन्य सार्वजनिक अवकाश अलग-अलग राज्यों, प्रदेशों और शहरों में मनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलियाई राजधानी क्षेत्र में केनबरा दिवस मनाया जाता है, साउथ ऑस्ट्रेलिया में वॉलंटियर्स डे तथा वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया में फाउंडेशन डे।

अन्य महत्वपूर्ण तिथियाँ (सार्वजनिक अवकाश नहीं)

- **हारमनी वीक** 21 मार्च वाले सप्ताह में मनाया जाता है और यह हमारी सांस्कृतिक विविधता का उत्सव है।
- **17 सितम्बर को ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता दिवस** वह दिन है जब हम ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता द्वारा दर्शाए जाने वाले साझे बंधन का उत्सव मनाते हैं और अपने देश के भविष्य को आकार देने में हमारे द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को दर्शाते हैं।
- **27 मई से 3 जून तक नेशनल रिक्नसिलिएशन वीक** वह सप्ताह है जिसमें हम एकता और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देकर समान राष्ट्र की ओर बढ़ने की कोशिश करते हैं।

ऑस्ट्रेलियाई लोग

ऑस्ट्रेलिया विश्व में सबसे अधिक विविध समाजों में से एक है। लगभग तीन प्रतिशत जनसंख्या अपनी पहचान आदिवासी और/या टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी के तौर पर करती है। ऑस्ट्रेलिया के एक चौथाई से अधिक निवासियों का जन्म विदेश में हुआ था, जिन्होंने 200 से अधिक देशों से प्रवास किया है। जनसंख्या की इस विविधता के कारण ऑस्ट्रेलिया में विविध प्रकार की भाषाएं, विश्वास, परम्पराएं और संस्कृतियां मौजूद हैं।

राष्ट्रमंडल देशों के सदस्य के तौर पर, ऑस्ट्रेलिया के युनाइटिड किंग्डम के साथ अभी भी घनिष्ठ संबंध हैं।

ऑस्ट्रेलियाई लोग ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता पर गर्व महसूस करते हैं, जो हमारे विविध समाज में एक महत्वपूर्ण एकीकृत बंधन है। ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता दिवस हर साल 17 सितम्बर को मनाया जाता है। यह सभी ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए हमारे देश का निर्माण करने और हमारे देश के भविष्य को आकार देने में हमारे द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को दर्शाता है।

ऑस्ट्रेलियाई अर्थ-व्यवस्था

ऑस्ट्रेलिया की स्थिर और प्रतिस्पर्धात्मक अर्थ-व्यवस्था है, और यह अपने जीवंत और कुशल कार्यबल को मान्यता देता है। ऑस्ट्रेलिया के लोगों की जीवन-शैली की गुणवत्ता दुनिया की उत्कृष्ट जीवन-शैलियों में से है।

Dick Smith (जन्म: 1944)

डिक स्मिथ ; (Dick Smith)एक प्रमुख ऑस्ट्रेलियाई व्यवसायी, साहसिक व्यक्ति एवं मानवता प्रेमी हैं. डिक स्मिथ ने इलेक्ट्रोनिक्स के व्यवसाय में अपनना सिक्का जमाया और उन्होंने अपनी सम्पत्ति का उपयोग ऑस्ट्रेलिया को उन्नत बनाने के लिए किया. उन्होंने केवल ऑस्ट्रेलियाई आधारित खाद्य कम्पनी आरंभ की और उन्होंने इन कम्पनियों के स्वामित्व को ऑस्ट्रेलियाई व्यक्तियों के लिए आरक्षित रखे रहने के लिए लाखों डॉलर का निवेश किया.

1986 में उन्हें 'आँस्ट्रेलियन आँफ दि इयर' की उपाधि से पुरस्कृत किया गया और उन्होंने तकनीकी प्रोन्नोति तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए भी एक पुरस्कार जीता. गर्म हवा के बैलून के सहारे ऑस्ट्रेलिया और तस्मान समुद्र पार करने वाले वे पहले व्यक्ति थे. वे अपनी साहस, व्यावसायिक सफलता और ऑस्ट्रेलिया के प्रति गहन प्रेम के कारण विख्यात हैं.

बाज़ार

ऑस्ट्रेलिया के स्थिर आधुनिक वित्तीय संस्थान और कर तथा व्यापार विनियम व्यापारिक गतिविधि को निश्चितता देते हैं। पर्यटन, शिक्षा व वित्तीय सेवाओं जैसे सेवा उद्योग ऑस्ट्रेलिया के सकल घरेलू उत्पाद की महत्वपूर्ण राशि उत्पन्न करते हैं।

ऑस्ट्रेलिया की आर्थिक स्थिरता निवेश के लिए इसे एक आकर्षिक स्थान बनाती है। ऑस्ट्रेलिया का शेयर बाज़ार एशिया-पेसेफिक क्षेत्र के सबसे बड़े बाज़ारों में से एक है।

व्यापार

ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े व्यापारिक सहभागी हैं: चीन, जापान, युनाइटिड स्टेट्स, साउथ कोरिया, सिंगापुर, भारत, न्यू ज़ीलैंड और युनाइटिड किंग्डम। ऑस्ट्रेलिया के मुख्य निर्यातों में शामिल हैं: कोयला, कच्चा लोहा, प्राकृतिक गैस, और शिक्षा व पर्यटन सेवाएँ। अर्थ-व्यवस्था खुली है और व्यापार ऑस्ट्रेलिया की आर्थिक संपन्नता में हमेशा एक अहम योगदानकर्ता रहा है।

खनन

ऑस्ट्रेलिया कोयला, तांबा, तरल प्राकृतिक गैस तथा मिनरल सैंड्स जैसे प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है. विश्व भर में इनकी भारी मांग है।

वैश्विक नागरिक के रुप में ऑस्ट्रेलिया

एक अच्छे वैश्विक नागरिक के रूप में ऑस्ट्रेलिया को अपनी भूमिका पर गर्व है. ऑस्ट्रेलिया दुनिया-भर के ऐसे देशों की मदद करके इसकी झलक दिखाता है जो इससे कम खुशकिस्मत हैं.

अंतर्राष्ट्रीय सहायताएं एवं मानवतावादी प्रयास

ऑस्ट्रेलिया सरकार का अंतर्राष्ट्रीय सहायता कार्यक्रम गरीबी कम करने एवं चिरस्थायी विकास प्राप्त करने में विकासशील देशो की मदद करता है। लोगों और सरकारों की मदद करके क्षेत्र और विश्व भर में यह समर्थन प्रदान किया जाता है।

जब कभी हमारे अपने देश या बाहर के मुल्को में संकट की घडी आती हैं तो ऑस्ट्रेलिया अपार उदारता पद्रशिर्त करता है। हम निजी दान और ऑस्ट्रेलिया के सहायता कार्यक्रम के माध्यम से ऐसे देशो को भी निरन्तर अनुदान देते रहते हैं जो लगातार मुसीबत से घिरे रहते हैं।

2018 में, Dr Richard Harris और Dr Craig Challen को थाईलैंड में गुफा की बाढ़ में 12 किशोरों और उनके सॉकर कोच को बचाने में किए उनके प्रयासों के लिए दूसरा सर्वश्रेष्ठ ऑस्ट्रेलियाई बहादुरी पुरस्कार, Star of Courage दिया गया, साथ में मेडल ऑफ ऑर्डर ऑफ ऑस्ट्रेलिया (OAM) भी दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय फोरमों में सक्रिय भागीदारी

1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) के आरंभ से ही ऑस्ट्रेलिया इसका एक सक्रिय सदस्य रहा है। ऑस्ट्रेलिया उन लोगों को संरक्षण प्रदान करता आया है जिनकी पहचान 1951 के संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी अधिवेशन (1951 UN Refugee Convention) के तहत शरणार्थी के रूप में की गई है।. हम विकासशील देशों के लिए संयुक्त राष्ट्र के शांति प्रयासों एवं मानवतावादी तथा आपातकालीन स्थितियों में भी योगदान देते हैं और इसकी संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठनों (UNESCO) में भी सक्रिय भागीदारी है।

1971 में ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (Organisation for Economic Cooperation and Development - OECD) का एक पूर्ण सदस्य बन गया. OECD का लक्ष्य विश्व में व्यापार का विस्तार करते हुए विश्व भर के लोगों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण को बेहतर बनाना है।

ऑस्ट्रेलिया एशिया-प्रशान्त क्षत्रे में घनिष्ठ सहयोग का प्रबल समथर्क है। यह एशिया-प्रशान्त आर्थिक सहयोग (Asia-Pacific Economic Cooperation - APEC)], पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन, और प्रशान्त द्वीपसमुह मचं (Pacific Islands Forum – PIF)का सक्रिय सदस्य है। यह दक्षिणीपूर्वी एशियाई राष्ट्र के संवाद सहयोगी और इसके क्षेत्रीय मंच में सहभागियों का एक संघ है।

Dr Catherine Hamlin AC (जन्म: 1924-2020)

डॉ. कैथरीन हैमलीन (Dr Catherine Hamlin) एक स्त्री-रोग विशेषज्ञ हैं जिन्हें इथोपिया की औरतों को यातना भरे जीवन से मुक्त करने के कारण शोहरत मिली है। 1959 से डॉक्टर हैमलीन इथोपिया के एड्डीस अबाबा में कार्यरत रही हैं जहां उन्होंने 'ऑब्स्टेट्रिक फिस्च्युला' नामक प्रसवकालीन क्षति से निजात पाने में महिलाओं की सहायता की है। इस समस्या से ग्रस्त औरतें अपने शारीरिक प्रकार्यों पर नियंत्रण नहीं रख सकतीं हैं और इस कारण उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

डॉक्टर हैमलीन और उसके पति ने एड्डीस अबाबा फिस्च्युला हॉस्पीटल स्थापित किया। उनके प्रयासों का परिणाम यह रहा कि हजारों औरतें अपने-अपने घर-गांव लौटकर पूर्ण स्वस्थ जीवन जीने में सक्षम हुई हैं।

1995 में डॉ. हैमलीन को 'कम्पेनियन ऑफ दि ऑर्डर ऑफ ऑस्ट्रेलिया' बनाया गया जोकि ऑस्ट्रेलिया का सर्वोच्च पुरस्कार है।

ऑस्ट्रेलिया के नोबेल पुरस्कार विजेता

ऑस्ट्रेलिया वैज्ञानिक एवं चिकित्सीय अनुसंधान के लिए प्रसिद्ध रहा है. इन क्षेत्रों में निम्नलिखित ऑस्ट्रेलियाई लोगों को नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

- प्रोफेसर विलियम ब्रैग [Professor William Bragg], (1862 -1942) एवं लॉरेन्स ब्रैग [Lawrence Bragg] (1890 -1971) भौतिक विज्ञानी
  विलियम ब्रैग (पिता) एवं लॉरेन्स ब्रैग (पुत्र) को 'एक्स-किरणों के माध्यम से स्फटिक संरचना के विश्लेषण की दिशा में उनकी सेवाओं के लिए' संयुक्त रूप से 1915 में भौतिक शास्त्र का नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- ऐडिलेड, साउथ ऑस्ट्रेलिया, में जन्मे Sir Howard Walter Florey (1898–1968)
  ने 'पेन्सिलिन एवं अनेक संक्रामक रोगों में इसके आरोग्यकारी प्रभाव की खोज के लिए' 1945 में (संयुक्त रूप से) फिजियोलॉजी या मेडिसिन में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।
- विक्टोरिया में जन्में Sir Frank Macfarlane Burnet (1899–1985)
  को 'अर्जित रोग-प्रतिरोधक सहनशीलता की खोज के लिए' 1960 में शारीरिकी या चिकित्सा के क्षेत्र में (संयुक्त रूप से) नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- Sir John Carew Eccles (1903–97)
  का जन्म मेल्बॉर्न में हुआ था और वह एक शरीर-क्रिया विज्ञानी थे तथा उन्हें 1963 में (संयुक्त रूप से) 'स्नायु-कोशिका झिल्ली के परिवृयीय एवं मध्य भागों के उत्तेजन एवं संकुचन में निहित आयनिक कार्य-प्रणाली से सम्बंधित खोजों के लिए' शारीरिकी या चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।
- चिकित्सक और बायोफिजिसिस्ट Sir Bernard Katz (1911–2003)
  का जन्म जर्मनी में हुआ था, वह 1941 में ऑस्ट्रेलियाई नागरिक बने। उन्हें 1970 में 'तंत्रिका टर्मिनलों में विनोदी ट्रांसमीटर तथा उनके भंडारण, रिलीज और असक्रियता के लिए उपायों संबंधी खोजों' के लिए फिजियोलॉजी या मेडिसिन में नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- Professor John Warcup Cornforth (1917–2007),
  जो एक केमिस्ट थे, उनका जन्म सिडनी में हुआ था और उन्हें 1975 में रसायन शास्त्र में (संयुक्त रूप से) 'एन्जाइम-उत्प्रेरित प्रतिक्रियाओं की स्टीरियोकेमिस्ट्री विषय पर उनके कार्य के लिए' नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- Professor Peter Doherty (जन्म 1940) एक प्रतिरक्षाविज्ञानी थे और
  उनका जन्म क्वींसलैंड में हुआ था और उन्हें 'कोशिका-माध्यमित इम्यून प्रतिरक्षा की विशिष्टता से सम्बंधित खोजों के लिए' 1996 में (संयुक्त रूप से) शारीरिकी या चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- Professor Barry Marshall (जन्म 1951) एक गैस्ट्रोएंट्रोलोजिस्ट थे, और Doctor Robin Warren (जन्म1937) एक पैथॉलाजिस्ट थे,
  Barry Marshall और Robin Warren 'बैक्टीरियम हेलिकोबैक्टर पाइलोरी तथा गैस्ट्राइटिस एवं पेप्टिक अल्सर रोगों में इसकी भूमिका' की खोज के लिए 2005 में शारीरिकी या चिकित्सा के लिए नोबेल पुरस्कार के संयुक्त विजेता बने।
- Professor Elizabeth Helen Blackburn (जन्म 1948)
  जो एक जीवविज्ञानी थी, उनका जन्म होबर्ट में हुआ था और उन्हें शरीर विज्ञान या चिकित्सा में (संयुक्त रूप से) 'गुणसूत्र टेलोमर्स और एंजाइम टेलोमिरेज द्वारा कैसे संरक्षित होते हैं' की खोज के लिए 2009 में नोबेल पुरस्कार मिला था।
- Professor Brian P. Schmidt (जन्म 1967), जो कि एक खगोल-विज्ञानी थे,
  Brian P. Schmidt को 'दूर के सुपरनोवा के अवलोकन के माध्यम से ब्रह्मांड के त्वरित विस्तार की खोज के लिए' 2011 में भौतिक विज्ञान में नोबेल पुरस्कार (संयुक्त रुप से) मिला।

निम्नलिखित ऑस्ट्रेलियाई लोगों को साहित्य में नोबेल पुरस्कार मिला है।

- लन्दन में ऑस्ट्रेलियाई माता-पिता के घर जन्में Patrick White (1912–90)
  को 1973 में 'साहित्य में एक नए महाद्वीप पर प्रकाश डालने वाली एक महाकथा एवं मनोवैज्ञानिक वाचनात्मक कला के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया।'

भाग छ:

हमारी ऑस्ट्रेलियाई गाथा

हमारी ऑस्ट्रेलियाई गाथा

कई लोगों और समारोहों ने ऑस्ट्रेलियाई गाथा को आकार दिया है।

आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रटे द्वीपवासी लोग

आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रटे द्वीपवासी लोग ऑस्ट्रेलिया के प्रथम निवासी थे, जिनकी विश्व में सबसे पुरानी आदिवासी संस्कृति और परंपराएँ हैं।

पुरातत्व अभिलेख यह दर्शाते हैं कि आदिवासी लोग 65,000 और 40,000 सालों के बीच ऑस्ट्रेलिया आए; परन्तु, आदिवासी लोगों का मानना है कि वे इस भूमि के निर्माण से जुड़ी कहानियाँ उनसे सम्बंधित हैं, और उनकी निर्माण कहाँनियों की शुरुआत समय की शुरुआत के साथ हुई है।

आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की पुरानी विचारधाराएँ और परंपराएँ हैं जो आज भी उनका मार्गदर्शन करती हैं। इस धरती से उनका एक गहरा लगाव है जिसकी अभिव्यक्ति उनकी कथाओं कलाओं और उनके नृत्यों में होती है।

भाषाएँ

ब्रिटिश उपनिवेश से पहले, आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों ऑस्ट्रेलिया में द्वारा 700 से अधिक भाषाएँ और बोलीओं का प्रयोग किया जाता था। आज भी इनमें से 100 से भाषाओं का प्रयोग किया जाता है, हालाँकि बीस से कम को अभी आगे बच्चों को सीखाया जा रहा है। जनजातीय संस्कृतियों का मौखिक इतिहास अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनसे हम लोगों और इस धरती की कहानी जान पाते हैं।

ड्रीमिंग (स्वप्न देखना)

ड्रीमिंग पश्चिमी दुनिया का एक शब्द जिसका प्रयोग अक्सर उस ज्ञान, आस्था और अभ्यास की प्रणाली का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो आदिवासी लोगों के जीवन का मार्गदर्शन करती है।

ड्रीमिंग से सम्बंधित कहानियां बच्चों को उनके माता-पिता और बड़े-बूढ़ों ने सुनाई। इन कहानियों से बच्चों को यह पता चला कि उनकी धरती का रूपाकार कैसे तय हुआ और कैसे लोग आकर बसे। इन कहानियों ने बच्चों को अनमोल व्यावहारिक शिक्षाएं भी प्रदान कीं, उदाहरण के लिए, भोजन की तलाश कहां की जाए.

संगीत, गीत और नृत्य का प्रयोग करके ड्रीमिंग की कहानियाँ सुनाई जाती हैं। जब आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोग नाचते-गाते हैं, तो वे अपने पूर्वजों के साथ एक गहन सम्बंध का अहसास करते हैं।

जनजातीय कला अपने मूल स्वरूप में पत्थर पर उकेरे गए चित्र या पेंन्टिग तथा जमीन पर बनाई गई। केंद्रीय ऑस्ट्रेलिया के लोग सामान्यत: बिंदुओं, घेरे और विशिष्ट सांस्कृतिक चिन्हों का प्रयोग करके विजुअल आर्ट का निर्माण करते हैं और ऐसा करके ड्रीमिंग की कहानियों और भूमि को दर्शाते हैं, जबकि ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी भागों में रहने वाले लोगों ने मानवों, जानवरों, चिन्हों और आत्माओं के चित्र बनाते हैं। .

आज भी आदिवासी लोगों के लिए ड्रीमिंग का महत्वपूर्ण रहना जारी है।

कैकाडु (Kakadu) आदिवासी कला

ऑस्ट्रेलिया आने वाले पहले यूरोपीय लोग

आरंभिक यूरोपीय खोज

17वीं सदी में यूरोपी खोजकर्ताओं ने वह भूभाग ढूंढ निकाला जिसे उन्होंनें 'टेरा ऑस्ट्रेलिस इन्कॉग्निटा' का नाम दिया था - यानि की दक्षिण की अज्ञात धरती। 1606 में Willem Janszoon, नामक एक डच व्यक्ति ने ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी सिरे में कैप यॉर्क प्रायद्वीप [Cape York Peninsula], के पश्चिमी भाग का नक्शा तैयार किया। इस समय के करीब, एक स्पेनिश समुद्री जहाज जिसका कप्तान Luís Vaez de Torres था, वह ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी जलस्रोत से होकर गुजरी।

1600 के दशक में, डच नाविकों ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के समुद्री तट की खोज की और इसे 'न्यू हौलेंड' कहा।

1642 में, Abel Tasman ने एक नई भूमि के समुद्री तट की खोज की और उन्होंने उसका नाम 'Van Diemen की भूमि' रखा (जिसे अब तस्मानिया कहा जाता है)। उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई समुद्री तट के हज़ारों मील की यात्रा की। न्यू हौलेंड का उनका अधूरा नक्शा यह दिखाता है कि उनका मानना था कि भूमि उत्तर में पापुआ न्यू गिनी से जुड़ी है।

William Dampier पहला अंग्रेज था जिसने ऑस्ट्रेलियाई धरती पर पैर रखा। 1684 में, उसने उत्तर-पश्चिमी समुद्री तट पर पैर रखा। क्योंकि यह भूमि बहुत शुष्क और मिट्टी वाली थी, इसलिए उसने इसे व्यापार या उपनिवेश के लिए उपयोगी नहीं माना।

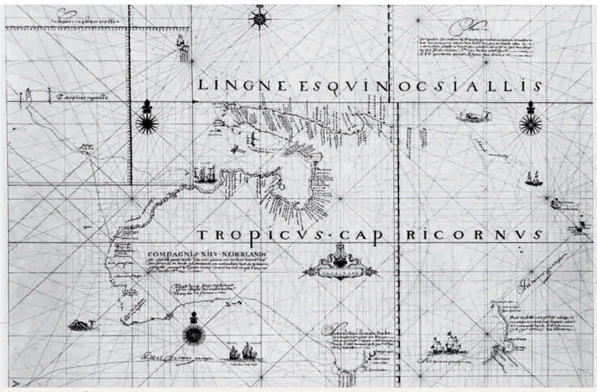

न्यू हॉलैंड का एबल तस्मान [Abel Tasman], द्वारा खींचा गया नक्शा, 1644

कैप्टन जेम्स कुक [Captain James Cook],

अंग्रेज जेम्स कुक के ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर 1770 में आने तक, इसे यूरोपीय लोगों के नहीं खोजा था। कुक को ब्रिटिश सरकार ने साउथ पेसेफिक की खोज यात्रा के लिए भेजा था। उसने पूर्वी समुद्री तट की यात्रा की और अपना समुद्री जहाज, Endeavour, आधुनिक सिडनी के कुछ ही दक्षिण में उतारा। James Cook ने इस भूमि का नाम 'न्यू साउथ वेल्स' रखा, और King George III के लिए इसका दावा किया।

अपराधियों का परिवहन

ऑस्ट्रेलिया इस बात को लेकर अनूठा है कि यूरोप से आकर पहले-पहल यहां बसने वाले ज्यादातर लोग आरोपित (अपराधी) थे। अमेरिका द्वारा स्वाधीनता हासिल कर लिए जाने के बाद ग्रेट ब्रिटेन अपने अपराधियों को वहां नहीं भेज सकता था और ब्रिटिश जेलें ठसाठस भरी हुई थीं। 1786 में ग्रेट ब्रिटेन ने इन आरोपियों को न्यू साउथ वेल्स के नए उपनिवेश (कॉलोनी) में भेजना तय किया।

प्रथम उपनिवेश

न्यू साउथ वेल्स कॉलोनी के प्रथम गवनर्र कैप्टन आर्थर फिलिप थे। वे 11 जहाजों का पहला बेडा दुनिया के इस दूसरे कोने में सफलतापूर्वक ले आए, और उन्होंने 26 जनवरी 1788 को सिडनी कोव में 'फर्स्ट फ्लीट (पहले बेड़े)' का मार्गदर्शन किया। इस दिन की वर्षगांठ को हम हर साल ऑस्ट्रेलिया दिवस के तौर पर मनाते हैं।

आबादी बसाए जाने के आरंभिक वर्ष

आबादी बसाए जाने के आरंभिक वर्ष बहुत ही कठिन थे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी भूखा न मरे, गवर्नर फिलिप ने हर किसी को एक ही राशन देने का निर्णय किया - यहां तक कि अपने अधिकारियों और खुद को भी। उन प्रथम कठिन वर्षो में उनके विवेक और दृढ़निश्चय के कारण ही यह उपनिवेश जीवित रह सका।

आरोपियों ने शुरुआती उपनिवेश में कड़ा परिश्रम किया। अपनी सजा पूरी कर लेने वाले आरोपी स्वतंत्र स्त्री-पुरुषों की तरह समुदाय में रहकर काम कर सकते थे और परिवार बसा सकते थे।

ब्रिटेन से चलकर 1788 में
सिडनी कोव पहुंचा पहला बेड़ा (फर्स्ट फ्लीट)

नए अवसर

ऑस्ट्रेलिया की प्रथम यूरोपीय आबादी में मुख्यत: अंग्रेज, स्कॉटिश, वेल्श एवं आयरिश लोग शामिल थे। हालांकि अतीत में स्कॉटिश, वेल्श एवं आयरिश लोग अक्सर अंग्रेजों से युद्ध में भिड़े रहते थे, मगर ऑस्ट्रेलिया में ये चारों समूह साथ मिल-जुल कर निवास और काम करते थे।

आरोपियों और पूर्व आरोपियों ने कॉलोनी में नए अवसरों का पता लगाना शुरु किया। कुछ आरोपियों ने व्यापारियों के तौर पर व्यापार शुरु किए। अन्य आरोपियों ने किसानों, व्यवसायिकों, दुकानदारों और सरकारी कर्मचारियों के तौर पर सफलता हासिल की।

Caroline Chisholm (1808-1877)

कैरोलिन क्रिसहॉम (Caroline Chisholm)एक अग्रणी समाज सुधारक थी जिन्होंने आरंभिक कॉलोनियों में अकेली औरतों की दशा में सुधार किया. कैरोलिन 1838 में अपने सैन्य अधिकारी पति और पांच बच्चों के साथ ऑस्ट्रेलिया आई. वह सिडनी की सड़कों पर रहने वाली आप्रवासी औरतों की मदद करने लगी. कुछ ही वर्षो में कॉलोनी के इर्द-गिर्द उसने आप्रवासी औरतों के लिए 16 होस्टल स्थापित कर दिए।

जहाज पर उपनिवेशों की यात्रा करने वाले लोगों की जीवन-दशा सुधारने के लिए कैरोलिन ने बहुत परिश्रम किया. गरीबी एवं निर्भरता से निजात पाने के लिए उसने गरीब लोगों के लिए एक ऋण-योजना का आरंभ भी किया.

वर्तमान समय में ऑस्ट्रेलिया के कई स्कूलों के साथ कैरोलिन क्रिसहॉम का नाम जुड़ा है। उसे 'आप्रवासियों की दोस्त' के नाम से जाना गया और लोगों को एक नए जीवन की शुरुआत करने में मदद देने के लिए उसे याद रखा जाता है।

गवर्नर मैक्कायरी

हमारे आरंभिक इतिहास में गवनर्र फिलिप के साथ-साथ गवनर्र Lachlan Macquarie का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने 1810 से 1821 के बीच न्यू साउथ वेल्स पर शासन किया, उन्होंने इस कॉलोनी का विकास आरोपियो की कॉलोनी के रूप में न करके एक स्वतत्रं बस्ती के रूप में किया। उन्होंने कृषि की प्रथओं को सुधारा तथा नई सडक़ो और जन-सुविधाओं का निर्मांण किया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की खोज के कार्य को प्रोत्साहन दिया।

गवर्नर मैक्कायरी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी धन लगाया तथा भूतपूर्व आरोपियों के अधिकारों को महत्व दिया। कुछ पूर्व आरोपियों को उन्होंने जजों एवं लोक सेवकों के रूप में काम भी दिया।

गवनर्र मैक्कायरी को इतिहास में इसलिए सम्मान प्राप्त है क्योकि उन्होंने कॉलोनी में कई सकारात्मक परिवर्तन लाए. न्यू साउथ वेल्स में मैक्कायरी विश्वविद्यालय का नाम उन्हीं से जुडा़ हुआ है।

आरोपियों की विरासत

यह माना गया कि गवनर्र का पद इतना शक्तिशाली है कि उसे एक ही व्यक्ति में निहित नहीं रखा जा सकता है, इसलिए 1823 में अगले गवनर्र का नाम तय करने और कॉलोनी का संशोधन करने के लिए न्यू साउथ वेल्स लेजिस्लेटिव कौसिल का गठन किया गया।

ग्रेट बिट्रेन ने 1840 में न्यू साउथ वेल्स, 1852 में तस्मानिया तथा 1868 में वस्टर्न ऑस्टेलिया में आरोपियों को भेजना बंद कर दिया। ये कॉलोनीवासी अपने अपराधी अतीत को लके र शर्मिन्दा थे और इसके बारे में वे किसी से कोई बात नहीं करते थे कुल मिलाकर 160,000 से अधिक आरोपी ऑस्ट्रेलिया लाए गए। धीरे-धीरे पूर्व आरोपियों और उपनिवेशकों के बीच अंतर मिट गए। 1850 के बाद से कॉलोनीवासी स्वयं शासन चलाने लगे और वे एक सम्मानित समाज का निर्माण करना चाहते थे। कई ऑस्ट्रेलियाई अपने आरोपी इतिहास से कहीं आगे निकल चुके हैं।

यूरोपीय उपनिवेश के बाद आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोग।

अनुमान है कि 1788 में यूरोपीय आबादी के बसना आरंभ होते समय ऑस्ट्रेलिया में आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की संख्या 750.000 से लेकर 1.4 मिलियन के बीच थी। उनकी इस संख्या में करीब 250 व्यक्तिगत राष्ट्र एवं 700 से भी भाषा-समूह शामिल थे।

जब वे पहले-पहल ऑस्ट्रेलिया में आकर बसे तो ब्रिटिश सरकार ने इन आदिवासी लोगों से कोई सन्धि नहीं की. ब्रिटिश प्राधिकरणों का मानना था कि वे कानूनी तौर पर भूमि के स्वामित्व के अधिकारी हैं।

इन आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की अपनी अलग अर्थ-व्यवस्था थी और जमीन से उनका बहुत पुराना और स्थायी लगाव था। जहाँ वे कभी अपने नियमों के अधीन रहते थे, वहीं अब उन्हें नए आए लोगों के कानूनों को स्वीकार करने पर विवश होना पड़ रहा था। इन नए आए लोगों को आमंत्रित नहीं किया गया था और इनका सामान्यत: स्वागत नहीं किया जाता था।

–ब्रिटिश उपनिवेशकों के आने से आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के जीवन में गहरा परिवर्तन हुआ। जैसे-जैसे उपनिवेशकों ने नए सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदेश लागू करने की कोशिश की, वैसे-वैसे कई लोगों की जान गई और भूमि को कब्ज़े में लिया गया। नए जानवरों, पौधों और रोगों की प्रस्तावना की गई।

आरंभिक गवर्नरों से कहा गया था कि वे आदिम लोगों को कोई नुकसान न पहुंचाएं, मगर ब्रिटिश आबादी वाले लोग आदिम लोगों के क्षेत्रों में घुस बैठे और बहुत से आदिम लोगों की हत्या कर दी गई। इस तरह के अपराधों के लिए उपनिवेशकों को सामान्यतः कोई सजा नहीं दी जाती थी।

कुछ आदिम लोग एवं यूरोपीय उपनिवेशी शांतिपूर्वक साथ-साथ रहने में सफल हुए. कुछ बाशिन्दों ने आदिम लोगों को भेड़ों-जानवरों के फार्म पर नौकरियों पर रखा. गवर्नर मैक्वायरी ने आदिम लोगों को खेती के लिए खुद की जमीन उपलब्ध कराई और उनके बच्चों के लिए स्कूल खुलवाए। परन्तु बहुत ही कम आदिम कबीले इन बाशिन्दों की तरह जीवन गुजारना चाहते थे, क्योंकि वे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को गंवाना नहीं चाहते थे।

भूमि को लेकर हुई लड़ाईयों में कई आदिवासी लोगों की जान गई। हालाँकि इसकी सटीक संख्या ज्ञात नहीं है, यह अनुमान लगाया जाता है कि हज़ारों-लाखों आदिवासी लोग मारे गए। यूरोपीय लोगों के कारण इस देश में आई बीमारियों से इससे भी कई अधिक आदिवासी लोगों की मृत्यु हुई। आदिम लोगों के जीवन का इतना भारी पैमाने पर विनाश प्रलयकारी था.

इतिहासिक उपलब्धियाँ

अंतर्देशीय खोज

न्यू साउथ वेल्स में आरंभिक उपनिवेशियों को कड़े संकटों का सामना करना पड़ा. आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों ने इस तरह के शुष्क वातावरण में जीवन-यापन करना सीख लिया था, हालांकि सूखे के समय में उन्हें भी बहुत कुछ झेलना पड़ता था।

सिडनी के अंतर्देशीय खोज के क्रम में खोजकर्ताओं को जिस बड़ी बाधा का सामना करना पड़ा था, वह ब्लू माउन्टेंस (सिडनी के पश्चिम में करीब 50 किलोमीटर) थी 1813 में, तीन पुरुषों Gregory Blaxland, William Charles Wentworth और ने William Lawson अंतत: इस पर्वत श्रृंखला को पार करने में सफलता प्राप्त की। आज भी ब्लू माउंटेन्स के आर-पार जो सड़कें और रेल लाइनें बिछाई गई हैं, वे उन्हीं के लिए गए मार्गो का अनुसरण करती है।

इन पर्वतों के दूसरी ओर अन्वेषकों को एक खुला प्रदेश मिला, जो भेड़ों और जानवरों को चराने के लिए बहुत अच्छा था. मगर उसके भी ज्यादा अन्दर जाने पर एक शुष्क, मरुस्थलीय प्रदेश था।

उन्हें पानी तलाशने तथा जीवित रहने के लिए भोजन साथ ले जाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। 1848 में पूर्व से पश्चिम की ओर प्रायद्वीप को पार करने के प्रयास में जर्मनी में जन्मा एक अन्वेषक, लुडविग लेखार्ट [Ludwig Leichhardt], लापता हो गया।

1860 में दक्षिण से उत्तर दिशा में ऑस्ट्रेलिया को पार करने के प्रयास में बर्के [Burke], और विल्स [Wills] मेलबॉर्न से चल पड़े। हालांकि उनका अभियान बहुत बड़ा था, मगर पार करना कठिन था। बर्के और विल्स अनुभवी बुशमेन नहीं थे। आदिम यांडुवांधा [Yandruwandha] लोगों से उन्हें कुशल सहायता मिली, मगर वापसी में इन दोनों ही खोजियों की मौत हो गई। बर्के और विल्स अपने इस अभियान में भले ही असफल रहे हों किन्तु कला और साहित्य में उनकी कहानी अमर है. अपने इस अभियान में भले ही वे असफल रहे हों किन्तु कला और साहित्य में उनकी कहानी अमर है। हमारे भूभाग की कठिनाई के बारे में यह एक करुण उदाहरण है।

उपनिवेशक एवं पायनीयर

उपनिवेशकों को अच्छा भूभाग मिल जाने के बावजूद भी उनका जीवन बड़ा कठिन था। बाढ़ और सूखे के हालातों से निपटने के बाद भी उपनिवेशक अपनी जीविका खो सकते थे और किसानों को सब-कुछ अक्सर नए सिरे से शुरू करना पड़ता था। फिर भी लोग खुद को संभालते और जूझते रहते थे. 'ऑस्ट्रेलिया के जुझारू' शब्द इस देश की संघर्ष-भावना और प्रतिरोधक्षमता को दर्शाते हैं। इन कठिन कालों में हौसला बनाए रखने के लिए हम उन स्त्री और पुरुष प्रवर्तकों (पायनीयरों) का सम्मान करते हैं। कई बार मर्दो के बाहर चले जाने या मर जाने पर स्त्रियों को व्यवसाय या फार्म का काम जारी रखना पड़ता था.

इन्हीं आरंभिक कठिन कालों में ऑस्ट्रेलिया की बन्धुत्व-चेतना का उदय हुआ. यह भावना आउटबैक से होकर झुंडों में यात्रा करने वाले लोगों में और भी अधिक बलवती थी. संकट की घड़ियों में भी उपनिवेशकों ने एक-दूसरे की मदद की। आज भी यह परम्परा ऑस्ट्रेलिया के जीवन-शैली का अंग बनी हुई है।

स्वर्ण- होड़ (गोल्ड रश)

1851 के आरंभ में न्यू साउथ वेल्स में सोने की खोज का वर्णन एक ऐसी खोज के रूप में किया गया है जिसने ''एक राष्ट्र की तकदीर बदल दी''। उसके शीघ्र बाद, नई स्वतंत्र कॉलोनी विक्टोरिया में भी सोना पाया गया।

1852 के आखिर तक, सोने की खोज में ऑस्ट्रेलिया के तमाम हिस्सों और दुनिया-भर से 90.000 लोग विक्टोरिया पहचं गए थे।

ऑस्ट्रेलिया के इतिहास में यूरेका [Eureka], क्रांति को एक महान लोकतन्त्रिक क्षण के रूप में याद किया जाता है। सोने की खुदाई करने के लिए लाइसेंस फीस लेते समय सरकारी-दल उन खननकमिर्यो के साथ बहुत ही कठोर व्यवहार करते थे। 11 नवम्बर 1854 को, करीब 10,000 लोग में बुनियादी लोकतांत्रिक अधिकारों के संविधा-पत्र को अपनाने के लिए Bakery Hill, Ballarat में एकत्रित हुए, इसमें सोने के महंगे लाइसेंस को हटाए जाना, और विक्टोरियाई संसद में प्रतिनिधित्व के लिए मतदान करने की क्षमता शामिल थी।

इसके बाद, यूरेका खुदाई-स्थलों पर 'यूरेका बाड़े' का निर्माण किया गया। इसी स्थान पर खुदाई कर्मचारियों ने बागी ध्वज (जिसपर सदन क्रॉस का चिन्ह था) पर यह शपथ ली कि वे एक दूसरे के साथ खड़े रहेंगे और अपने अधिकारों व स्वतंत्रताओं की रक्षा करने के लिए लड़ेंगे। 3 दिसम्बर 1854 की सुबह, सरकारी अधिकारियों ने बाड़े पर हमला करने के लिए सैनिक भेजे। छोटी लड़ाई के बाद, सोने की खुदाई करने वाले कर्मचारियों पर काबू कर लिया गया और करीब 30 की मौत हो गई।

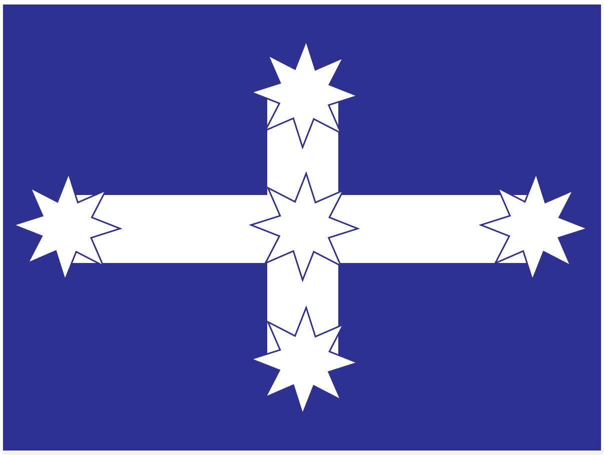

यूरेका ध्वज

जब राजद्रोह का मुकदमा चलाने के लिए बागी नेताओं को पेश किया गया, तो किसी भी ज्यूरी ने उन्हें आरोपी मानने से मना कर दिया। राजसी आयोग ने यह निष्कर्ष निकाला कि दोष सरकार का था तथा खनिकों की बहुत सी मांगें मान ली गईं, जिसमें राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए उनकी मांग शामिल थी। एक साल के अन्दर ही विद्रोहियों का नेता पीटर लैलर [Peter Lalor], विक्टोरिया की संसद का एक सदस्य बन गया।

आनेवाले वर्षो में यूरेका क्रांति विरोध और 'समान अवसर' दोनों ही के लिए हमारा प्रतीक बन गई है।

स्वर्ण- होड़ ने कई मायनों में ऑस्टेलिया में बदलाव ला दिया। स्वर्ण- होड़ के इन वर्षो में ऑस्टेलिया की आबादी 1851 की 430.000 की तलुना में 1871 में 1.7 मिलियन हो गई। इस बढती जनसख्ंया का एक-दूसरे से सम्पर्क-सूत्र जोडने के लिए 1850 में पहली बार रेलवे और टेलीग्राफ का निर्माण किया गया।

साउथ ऑस्ट्रेलिया के अलावा सभी कॉलोनियों में सोने के विशाल भंडार खोजे गए। अर्थ-व्यवस्था फल-फूल रही थी और ऊन के स्थान पर सोना ऑस्ट्रेलिया का सबसे बहुमूल्य निर्यात बन गया। लगभग 1890 तक, ऑस्ट्रेलिया के मानक विश्व भर में सर्वोत्तम मानकों में से थे।

स्कैटर एवं किसान

उपनिवेशों के आरंभिक दिनों से ही 'स्क्टैर' के नाम से जाने गए लोगों ने खतेी के लिए बडी -बडी जमीनें ले रखी थीं। हालांकि सामान्यतः उन्हें इस जमीन की कोई कीमत नहीं चुकानी पडती थी, मगर फिर भी ये स्कैटर लोग उन्हें अपनी ही जमीन समझते थे। प्रथम स्वर्ण-होड़ समाप्त होने के बाद स्कैटरों से ये जमीनें वापिस पाने के लिए सरकार को संघर्ष करन पड़ा।

1860 के दशक में सरकार ने इन स्कैटरों की जमीनों को कृषि-कार्य के लिए कामगारों और उनके परिवारों को देना चाहा। परन्तु स्कैटरों ने जितनी संभव हो सके उतनी ज़मीन अपने पास रखने की कोशिश की।

रेलवे का निर्माण होने तक, जिन किसानों के खेत बाज़ारों से बहुत दूरे थे उन्हें एक कठिन वातावरण का सामना करना पड़ा। शहरों में ज्यादा कमाई के अवसर के कारण, जमीन पर काम करना और थोड़ी-सी मजदूरी के लिए श्रम करना कतई आकर्षक बात नहीं थी।

कृषि कार्य को आसान बनाने के लिए मशीनों के आविष्कार की ऑस्ट्रेलियाई परंपरा साउथ ऑस्ट्रेलिया में शुरु हुई। उदाहरण के लिए, स्टम्प-जम्प प्लो (1870 के दशक में) ने फसलों की खेती के लिए कठोर जमीन को साफ करने का काम संभव बना दिया।

1800 के दशक के आरंभ में आव्रजन (माइग्रेशन)

1800 के दशक के आरंभ में अंग्रेज, स्कॉटिश, वेल्श तथा आयरिश बाशिन्दे इन उपनिवेशों में रहने वाले प्रमुख समूह थे। ऑस्ट्रेलिया के मनोरंजन के तरीके, सांस्कृतिक गतिविधियां तथा धार्मिक प्रथाएं युनाइटेड किंग्डम के जैसी ही थी। परन्तु छोटे समूहों में यूरोप और एशिया के प्रवासी भी थे। 1800 में आने वाले यूरोपीय उपनिवेशियों में इटैलियन, ग्रीक, पोल्स, माल्टीज, रशियन तथा वाइन उद्योग में काम करने वाले फ्रेंच लोग शामिल थे। इनमें से ज्यादातर युवा लोग थे जिन्हें काम और सौभाग्य की तलाश थी या वे ऐसे नाविक थे जो अपने जहाजों से भाग आए थे।

चीन के प्रवासियों का ऑस्ट्रेलिया में आने का क्रम 1842 के बाद शुरु हुआ, और सोने की खोज के बाद उनकी संख्या में वृद्धि हुई। सोने की खानों में जातिय तनाव होते थे, जिसके कारण कई बार चीनी लोगों के खिलाफ दंगे भड़क उठते थे, जैसे कि 1854 में बेन्डिगो [Bendigo], में हुआ। इन नस्लीय तनावों के कारण विक्टोरिया में 1855 में और न्यू साउथ वेल्स में 1861 में आव्रजन पर पहली बार प्रतिबंध लगे।

1850 की स्वर्ण-होड़ समाप्त हो जाने के बाद ज्यादातर चीनी लोग अपने स्वदेश लौट गए। बचे हुए लोगों में पानी की कमी वाले क्षेत्रों में जरूरी ताजे फलों और सब्जियों की आपूर्ति करने वाले बाजार के बागवान थे।

1860 के दशक के बाद से इरान, मिस्र और तुर्की के लोग ऑस्ट्रेलिया के आउटबैक में कैमेल (ऊँटों की) ट्रेन चलाने के लिए यहां आए। भारतीय ऊंट वालों के साथ-साथ उन सबको कुल मिलाकर 'अफगान' कहा जाता था क्योंकि उनकी वेश-भूषा एक जैसी थी और वे इस्लाम में आस्था रखते थे। इन ऊंट-सवारों को 'अंतर्देशीय अग्रगामी' का नाम दिया गया।

भारतीय और प्रशान्त द्वीपवासी लोग भी थे जो क्वींसलैंड के गन्ना एवं केला उद्योगों में काम करते थे, अक्सर बहुत कम वेतन और खराब हालातों में।

1880 के दशक से लेबनान के कामगार भी ऑस्ट्रेलिया आने लगे। इनमें से कई वस्त्र एवं फैब्रिक उद्योगों में शामिल थे, और .ऑस्ट्रेलिया के देहाती हिस्सों में बजाजी के व्यवसाय का ज्यादातर स्वामित्व लेबनानी परिवारों के पास था।

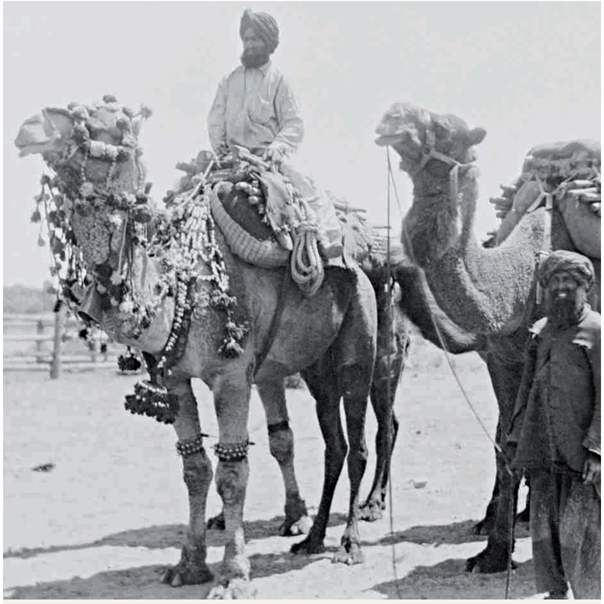
आउटबैक ऑस्ट्रेलिया में 'अफगान' ऊँटवाले

आदिम कालीन 'रिज़वर्स' (संरक्षित क्षेत्र)

आदिम लोगों और बाशिन्दों (उपनिवेशकों) के बीच के आरंभिक संघर्ष के समाप्त हो जाने के बाद आदिम लोगों को बस समाज के एक छोर पर ही रहने के लिए विवश किया गया। कुछ लोग बहुत ही कम मजदूरी पर भेड़ों और जानवरों के आउटबैक स्टेशनों पर काम करते थे, और इनमें से कईयों को तो वेतन भी नहीं दिया जाता था। औपनिवेशिक सरकारों ने कुछ 'रिज़व्र्स' (संरक्षित क्षेत्र) स्थापित किए जहां ये आदिम लोग रह सकते थे, परन्तु इन क्षेत्रों में ये आदिम लोग अपना पारम्परिक जीवन जी पाने में असमर्थ थे। जैसे कि, . वे अपनी इच्छानुसार शिकार नहीं कर सकते थे और इकट्ठा नहीं हो सकते थे।

1800 के दशक के अंत में, औपनिवेशिक सरकारों ने आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के अधिकार छीन लिए। वे यह नियंत्रण करते थे कि आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी कहाँ रहेंगे और किससे शादी करेंगे। उन्होंने कई आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी बच्चों को अपने माता-पिता से अलग कर दिया, और उन्हें 'अंग्रेज़' परिवारों या सरकारी अनाथालयों में भेज दिया। ऐसी नीतियाँ 20वीं सदी के मध्य तक चलती रही। इन 'स्टोलन जनरेशन (चोरी हुई पीढ़ियाँ)' का मामला कई आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के लिए गहन उदासी भरा रहना जारी है और यह 2008 में ऑस्ट्रेलियाई संसद में राष्ट्रीय क्षमा-याचना का विषय था।

सफ्रेजेट्स (मताधिकार)

मताधिकार चुनावों में मताधिकार का अभियान चलाने वाली औरतों के लिए 'सफ्रेजेट्स' शब्द का प्रयोग किया जाता था। 1880 और 1890 के दशकों के दौरान हर उपनिवेश में कम से कम एक मताधिकार समाज (सफ्रेज सोसायटी) हुआ करता था। इन सफ्रेजेट्स लोगों ने उपनिवेशों की संसदों में प्रस्तुत किए जाने के लिए याचिकाओं पर हजारों हस्ताक्षरों का संग्रह किया।

1895 में साउथ ऑस्ट्रेलिया की औरतों ने मत डालने एवं संसद के लिए चुनाव लड़ सकने का अधिकार प्राप्त कर लिया। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की औरतों को यह अधिकार 1899 में प्राप्त हुआ।

1902 में ऑस्ट्रेलिया ऐसा पहला देश बन गया जहां औरतों को दोनों ही अधिकार प्राप्त थे - मत देने का अधिकार और संसद में चुने जाने का अधिकार। आदिवासी और टोरस स्ट्रेट लोगों को मत देने का अधिकार 1962 तक प्राप्त नहीं हुआ था।

1923 में जब एडिथ कॉवेन [Edith Cowan], को वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की संसद के लिए चुना गया, तो वे पहली महिला सांसद बन गईं। 1943 में एनिड लॉयन्स [Enid Lyons], ऑस्ट्रेलिया की संसद में चुनी जाने वाली पहली महिला थी।.

Catherine Spence (1825-1910)

कैथरीन स्पेन्स (Catherine Spence) एक लेखिका, उपदेशिका, नारीवादी एवं सफ्रेजेट थीं। कैथरीन स्पेन्स स्कॉटलैंड से ऑस्ट्रेलिया आई थी और स्कूलों की किताबों के अलावा उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के जनजीवन के बारे में पुरस्कार-विजेता पुस्तकें लिखीं।

उन्होंने बेघर बच्चों की मदद के लिए एक संस्था की स्थापना में सहयोग दिया तथा नए किंडरगार्टेन्स एवं लड़कियों के लिए सरकारी माध्यमिक स्कूलों को सहायता प्रदान की।

वे संसद के लिए खड़ी होने वाली प्रथम महिला थी। हालाँकि उन्हें बहुत सारे मत प्राप्त हुए, मगर वे अपनी सीट नहीं जीत सकी। 1891 में वे वूमेन्स सफ्रेज लीग ऑफ साउथ ऑस्ट्रेलिया की वाइस-प्रेसिडेंट बनीं।

कैथरीन स्पेन्स इस बात की प्रतीक हैं कि औरतें क्या कुछ हासिल कर सकती हैं, यहां तक कि कठिन समयों में भी।

परिसंघ

हालाँकि 19वीं सदि के अंत तक कॉलोनियाँ अलग-अलग तौर पर विकसित हो गई थी, पर राष्ट्रीय अपनेपन की आम भावना पैदा हो गई थी।

19वीं सदी के अंत के पास, कॉलोनियों के एकसाथ लाने के लिए दो प्रयास किए गए थे। 1889 में, Sir Henry Parkes ने एक मज़बूत नए राष्ट्र की स्थापना के लिए आवाज लगाई। 1890 में ऑस्ट्रेलियाई परिसंघ के विचार पर चर्चा करने के लिए ऑस्ट्रेलेशियन फेडरेशन कांफ्रेंस का आयोजन किया गया।

1893 में, फेडरेशन बनाने के आंदोलन के कुछ विलंबों के बाद ज़ोर पकड़ा। निर्वाचकों ने अगली संविधानिक संधि के सदस्यों का चयन किया। नए ऑस्ट्रेलियाई संविधान को स्वीकार करने के लिए निर्वाचकों ने रेफरेंडम को दो राउंड्स में मतदान किया।

ब्रिटिश सरकार ने यह सहमति दी कि ऑस्ट्रेलिया अपना प्रशासन खुद कर सकता है। 1 जनवरी 1901 को एडमंड बार्टन ऑस्ट्रेलिया के पहले प्रधानमंत्री बने, जिन्होंने न्यू साउथ वेल्स में परिसंघ (फेडरेशन) आंदोलन का नेतृत्व किया था। सिडनी के सेन्टेनियल पार्क में भारी भीड़ की मौजूदगी में उनकी सरकार ने शपथ ग्रहण की।

ऑस्ट्रेलिया अब ब्रिटिश साम्राज्य के तह एक देश बन गया था। 1931 से पहले उसे प्रतिरक्षा एवं विदेशी मामलों में संपूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं हुए थे। 1948 के ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता अधिनियम तक, ऑस्ट्रेलियाई लोग ऑस्ट्रेलियाई नागरिक की बजाए अभी भी ब्रिटिश माने जाते थे। हालाँकि राष्ट्रीय भावना का उदय हो चुका था, किन्तु ब्रिटिश होने का बोध अभी भी मजबतू था

ब्रिसबेन में फेडरेशन दिवस, 1901

Edith Cowan (1861–1932)

Edith Cowan ऑस्ट्रेलियाई संसद में चयन की जाने वाली पहली महिला थी और ऑस्ट्रेलिया के पचास-डॉलर के नोट पर उनकी तस्वीर है।

Edith महिलाओं के मतिधार आंदोलन में प्रमुख थी, और वह सरकारी शिक्षा और बच्चों के अधिकारों के लिए एक अग्रणी पक्षसमर्थक थी। Edith को 1915 में मजिस्ट्रेट और 1920 में जस्टिस ऑफ पीस बनाया गया। 1921 में, Edith को नेशनलिस्ट पार्टी की सदस्य के तौर पर वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की विधान सभा में चुना गया।

राजनीतिक दलों का जन्म

1880 के दशक के आते-आते ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले कामगारों ने कई मजबूत ट्रेड यूनियन (मजदूर संघ) बना लिए थे। आर्थिक मंदी और सूखे के कठिन समयों में ये संघ अपनी मजदूरी और अपनी दशाओं के संरक्षण के लिए हड़ताल किया करते थे। उसके बाद इन कामगारों ने राजनीति की ओर रुख किया.

1891 में इन कामगारों ने राजनीतिक दल की स्थापना की, जिसे लेबर पार्टी कहते हैं। इसका मुख्य लक्ष्य कामगारों के पारिश्रमिक और उनकी दशाओं में सुधार लाना था। मध्यम-वर्ग के लोग मजदूरों से ज्यादा आरामदेह स्थितियों में रहते थे, मगर उन्हें मजदूरों की दशा का भी अहसास था। मजदूरी तय करने और हड़तालों पर रोक लगाने के लिए आधिकारिक बोर्डका गठन किया गया। 1907 में कॉमनवेल्थ कोर्ट ऑफ कौंसिलिएशन ऐंड आर्बिट्रेशन (कॉमनवेल्थ सहमति एवं मध्यस्थता न्यायालय) ने यह तय किया कि न्यूनतम मजदूरी इतनी होनी चाहिए कि एक कामगार, उसकी पत्नी और तीन बच्चे आरामदेही से रह सकें। जब लेबर पार्टी विकसित हो गई, तो 1910 में अन्य सभी पार्टियां लिबरल पार्टी के रूप में एकजुट हो गईं.

1910 में, लिबरल पार्टी के पहले संस्करण की स्थापना हुई। इस पार्टी के अगले कई सालों में कई नाम रखे गए, जिनमें नेशनलिस्ट पार्टी और युनाइटिड ऑस्ट्रेलिया पार्टी शामिल हैं। 1944 में, लिबरल पार्टी, जिस नाम से हम इसे आजकल जानते हैं, की स्थापना Robert Menzies द्वारा की गई, जो ऑस्ट्रेलिया के सबसे लम्बे समय तक कार्यकाल करने वाले प्रधानमंत्री बने।

पहले विश्व युद्ध के बाद, किसानों के मुद्दों को आगे बढ़ाने के लिए कंट्री पार्टी की स्थापना हुई। अब इसे नेशनल पार्टी के नाम से जाना जाता है, और आम-तौर पर यह लिबरल पार्टी के साथ गठबंधन में काम करती है।

1901 का आव्रजन परिसीमन अधिनियम

दिसम्बर 1901 में जब आव्रजन परिसीमन अधिनियम (Immigration Restrictions Act) पारित हुआ, तो 'श्वेत ऑस्ट्रेलिया' की नीति ने कानूनी रूप ले लिया। इसके कारण आप्रवासियों के ऑस्ट्रेलिया में रहकर काम करने एवं 'गैर-श्वेत' लोगों के प्रवास को सीमित कर दिया गया।

गैर-यूरोपीय पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को यूरोपीय भाषा में 50 शब्दों की एक श्रुतलेख परीक्षा (Dictation Test) देना पड़ती थी। चीनी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों, बैरिस्टर विलियम आह केट [William Ah Ket], एवं प्रमुख चीनी व्यापारियों ने सार्वजनिक विरोध प्रकट किया किन्तु इससे इस कानून को बदलने में कोई मदद नहीं मिल सकी।

ऑस्ट्रेलिया के नए परिसंघ में यूरोप से आने वाले प्रवासी प्रमुख थे। परंतु चीनी, भारतीय, प्रशान्त द्वीपवासी एवं मध्य-पूर्व के लोगों के सांस्कृतिक योगदान ऑस्ट्रेलिया की सामाजिक पहचान का पहले से भाग थे।

Dorothea Mackellar (1885–1968)

Dorothea Mackellar एक कवयित्री हैं जो अपनी कविता *My Country* के लिए बहुत जानी जाती हैं, यह कविता सबसे पहले 1908 में प्रकाशित हुई थी, जिसने 'I love a sunburnt country' पंक्ति को अमर कर दिया। उनकी कविताओं को सर्वोत्कृष्ट बुश (ग्रामीण क्षेत्र) की कविताओं में माना जाता है, इसकी प्रेरणा उन्हें उत्तर-पश्चिमी न्यू साउथ वेल्स में Gunnedah के करीब अपने भाई के खेतों पर बिताए अपने अनुभव से मिली थी।

1968 में, Dorothea को ऑस्ट्रेलियाई साक्षरता में उनके योगदान के लिए ब्रिटिश इंपायर के ऑर्डर के ऑफिसर की उपाधि दी गई थी।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914 - 1918)

उपनिवेशियों एवं आदिम लोगों के बीच चले विवाद के अलावा ऑस्ट्रेलिया उल्लेखनीय रूप से एक शांतिपूर्ण देश रहा है। यहां कोई भी गृह-युद्ध या क्रांति जैसी घटनाएं नहीं हुई हैं।

ऑस्ट्रेलिया की कई पीढ़ियाँ ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति काफी वफादार रही हैं।

परन्तु जब एशिया के लिए यूरोप का एक आउटपोस्ट बंद हो गया, तो ऑस्ट्रेलिया के लिए भी खतरा खड़ा हो गया, खास-तौर पर तब जबकि जापान एक महाशक्ति बन गया था। हम अपनी प्रतिरक्षा के लिए ब्रिटिश साम्राज्य और उनकी नौसैनिक शक्ति पर निर्भर थे।. ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूती प्रदान करने एवं ऑस्ट्रेलिया की रक्षा के लिए ऑस्ट्रेलिया ने दोनों ही विश्वयुद्धों में लड़ाई की।

ऑस्ट्रेलिया ने अगस्त 1914 में पहले विश्व युद्ध में प्रवेश किया, और 1915 में जर्मनी के मित्रराष्ट्र तुर्की पर हमला करने में भाग लिया। ऑस्ट्रेलियाई तथा न्यूजीलेंड सेनाओं (Anzacs) को गैलिपोली प्रायद्वीप पर आक्रमण करने की स्वतंत्र जिम्मेदारी दी गई।

उन्हें खडी चट्टानों पर चढ़ना था जबकि तर्की के सैनिक उनपर गोलीबारी कर रहे थे।. किसी तरह वे चट्टानों से उभरकर छपु तो गए, मगर कई युवा मारे गए. घरों में बेठै आस्ट्रेलियाई लोगों को इन एने जक़ै लोगों के उत्साह पर गर्व था. किसी तरह वे चट्टानों पर चढ़ गए और वहाँ अपनी जगह बना ली, मगर कई युवा मारे गए। घरों में बेठै आस्ट्रेलियाई लोगों को Anzacs की भावना पर पर गर्व था।

गैलिपोली के बाद ऑस्ट्रेलियाई सेना ने फ्रांस में वेस्टर्न फ्रंट (पश्चिमी मोर्चे) पर लड़ाई लड़ी. इसी जगह उनका नाम 'डिगर्स' (खनक) पड़ा क्योंकि खाइयां खोदने और जमाने में उन्हें काफी वक्त लगा। अपने कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जॉन मोनेश [General John Monash], के नेतृत्व में इन ऑस्ट्रेलियाई 'डिगर्स' ने जर्मनी के खिलाफ अपनी आखिरी लड़ाइयों में शानदार विजय हासिल की और फ्रेंच लोगों का हमेशा के लिए दिल जीत लिया जिनकी वे सहायता कर रहे थे।

ऑस्ट्रेलिया के सेवाकर्मी स्त्री-पुरुषों ने भी मध्य-पूर्व में सेवाएं दीं और वे स्वेज़ नहर की रक्षा और सिनाई प्रायद्वीप और पेलेस्तिन पर साझा विजय पाने में प्रतिभागी बने।

सिम्पसन और उसका गधा—
John Simpson Kirkpatrick (1892–1915)

प्रायवेट जॉन सिम्पसन ने स्ट्रेचर ले जाने वाले व्यक्ति की हैसियत से गैलिपोली में ऐम्ब्युलेंस मेडिकल कोर में काम किया। सेना की आज्ञा के खिलाफ जाकर घायल सैनिकों को सुरक्षित जगह पहुंचाने के लिए उसने डफी [Duffy], नाम के एक गधे से काम लिया. पहाड़ियों और घाटियों से होकर स्ट्रेचर ले जाना बड़ा कठिन काम था। सेना की आज्ञा के खिलाफ जाकर घायल सैनिकों को सुरक्षित जगह पहुंचाने के लिए उसने डफी [Duffy], नाम के एक गधे से काम लिया।

रात-दिन, घंटे-दर-घंटे,सिम्पसन और उसका गधा लड़ाई के मोर्चे और बीच कैम्प तक की यात्रा करते हुए अपना जीवन जोखिम में डालते रहे।

प्रायवेट जॉन सिम्पसन 25 अप्रैल 1915 को गैलिपोली पहुंच गया था. चार ही हफ्ते बाद वह दुश्मनों की मशीनगन से भून डाला गया। बीच कैम्प पर कार्यरत सेवाकर्मियों ने मौन उदासी के साथ देखा कि अपने मालिक के बिना ही डफी [Duffy] अभी भी एक घायल सैनिक को लिए बीच कैम्प की ओर टप-टप करता चला आ रहा था। John Simpson Kirkpatrick एक सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई है।

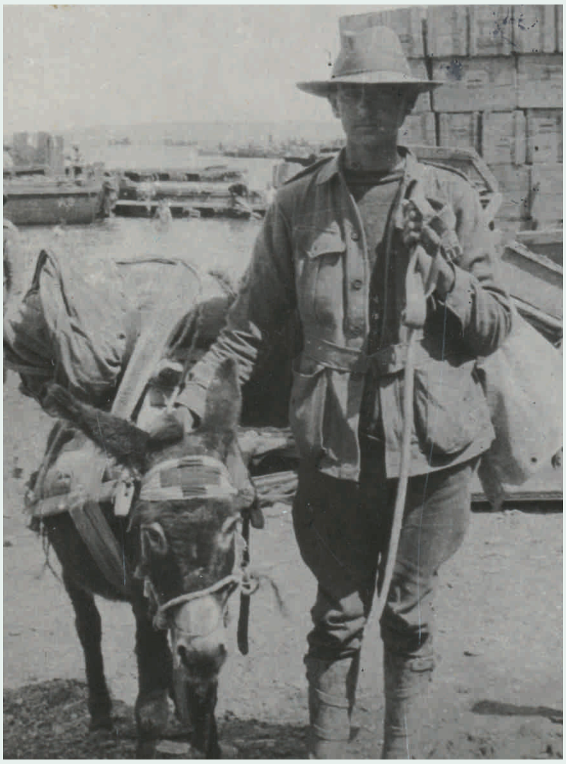

ऐनज़ैक का आख्यान

ऐनज़ैक की परंपरा तुर्की में गैलीपोली प्रायद्वीप पर बनी थी।

25 अप्रैल 1915 को गैलीपोली पर लैंडिंग (जमीन पर उतरने) ने उस अभियान की शुरुआत का आरम्भ किया जो आठ महीनों तक चला और जिसमें 26,000 से अधिक ऑस्ट्रेलियाई लोगों को नुकसान पहुँचा, जिनमें 8000 से अधिक लोग थे जिनकी मृत्यु उन्हें मारे जाने या किसी रोग के कारण हुई। गैलीपोली प्रायद्वीप पर सैनिकों के तौर पर सेवा करने वालों की बहादुरी और भावना ने इस आख्यान को आकार दिया और शब्द 'ऐनज़ैक' ऑस्ट्रेलियाई और न्यू ज़ीलैंड की भाषा का भाग बन गया।

25 अप्रैक 1916 को, ऑस्ट्रेलिया, न्यू ज़ीलैंड और इंग्लैंड तथा मिस्त्र में सैनिकों ने इस लैंडिंग की पहली वर्षगांठ मनाई। इसके बाद से, 25 अप्रैल को ऐनज़ैक डे के तौर पर जाना जाता है।

1920 के दशक तक, ऐनज़ैक डे के समायोह पूरे ऑस्ट्रेलिया में आयोजित किए जाने लगे और राज्यों ने ऐनज़ैक डे के दिन सरकारी अवकाश की घोषणा की।

राजधानी क्षेत्रों में मुख्य युद्ध स्मारक बनाए गए, और पूरे देश में शहरों और कस्बों में स्मारकों ने उस और बाद के संघर्षों में शहीद हुए नवयुवक और नवयुवतियों को श्रृद्धांजलि दी।

ऐनज़ैक डे युद्धों, संघर्षों और शांति बनाए रखने के संचालनों में सेवा देने वालों और विपरीत स्थितियों में उनकी मित्रता और सहनशीलता तथा हमारे भविष्य के लिए उनके द्वारा किए बलिदानों का सम्मान करने का दिन है।
यह युद्ध के कई अलग-अलग अर्थों पर विचार करने का भी दिन है।

आज, ऐनज़ैक डे को ऑस्ट्रेलिया और विश्व भर में स्मरणोत्सव के तौर पर मनाया जाता है। युद्ध से वापिस आए ऑस्ट्रेलियाई पुरुष और महिला सैनिक, शांति बनाए रखने वाले दूत और अन्य देशों के सेवानिवृत सैनिक, सभी ऐनज़ैक डे की परेड में गर्व से मार्च करते हैं।

घोर मंदी (1929-1932)

घोर मंदी ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए अत्यंत कठिनाई का समय था। यह अक्तूबर 1929 में न्यू यॉर्क स्टॉक एक्सचेंज़ के गिरने के समय से शुरु हुई। ऑस्ट्रेलिया में मंदी में जिन अन्य कारकों ने योगदान दिया, उनमें शामिल हैं: ऑस्ट्रेलियाई उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में गिरावट और नियोक्ताओं द्वारा नौकरियाँ और वेतन कम करने के कारण हुआ औद्योगिक अशांति। 1932 के मध्य में लगभग 32 प्रतिशत ऑस्ट्रेलियावासी बेरोजगार हो गए थे.

ऑस्ट्रेलियाई समाज पर मंदी का प्रभाव विनाशकारी रहा। नौकरी और एक स्थिर आमदनी के बिना, कई लोगों ने अपने घरबार खो दिए। उन्हें कामचलाऊ आश्रय स्थलों में रहना पड़ा जिसमें कोई हीटिंग की सुविधा या शौचालय सुविधाएँ नहीं थी। कुछ पिताओं ने अपने परिवारों को छोड़ दिया या उन्हें शराब की लत पड़ गई। कई काम करने वाले बच्चों ने 13 या 14 साल की आयु में स्कूल छोड़ दिया। कई महिलाओं ने छोटी-मोटी नौकरियाँ की और साथ ही अपने आप बच्चों व घरों को संभाला।

मंदी की ओर कदम बढ़ाते हुए समय में ऑस्ट्रेलियाई सरकार के पास कोई भी केन्द्रीय बेरोजगारी कार्यक्रम नहीं था। चैरिटी एवं कुछ निजी संस्थाओं पर निर्भर रहने के अलावा, गरीब लोगों को रोजगार योजनाओं एवं लोक-निर्माण परियोजनाओं के सहारे जीना पडा। 1932 में अर्थतंत्र में सुधार भी आने लगे किन्तु कई मामलों में परिवारों को हुई क्षति पूरी नहीं की जा सकी।

इस घोर मंदी के समय ऑस्ट्रेलियाई चैरिटी संस्थाओं एवं स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया गया।

महामंदी के दौरान सूप किचन

सर चार्ल्स किंग्सफोर्ड स्मिथ (1897-1935)

सर चार्ल्स किंग्सफोर्ड स्मिथ एक शुरुआती ऑस्ट्रेलिया विमान-चालक थे। चार्ल्स किंग्सफोर्ड स्मिथ ने प्रथम विश्वयुद्ध में गैलिपोली में लड़ाई लड़ी तथा ब्रिटेन की रॉयल फ्लाइंग कोर में उड़ान भरी।

उनकी महानतम उपलब्धि थी - 1928 में कैलिफोर्निया से क्वींसलैंड तक प्रशान्त महासागर को पहली बार पार करना। जब सदर्न क्रॉस नाम का उनका विमान ऑस्ट्रेलिया पहुंचा, तो उनके 25.000 प्रशंसक अपने बहादुर 'स्मिथी' की अगवानी करने के लिए उपस्थित थे। 1932 में उड़ान के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 'नाइट' की उपाधि मिली।

दुःखद बात यह है कि 1935 में वे अपने विमान से इंग्लैंड से ऑस्ट्रेलिया की उड़ान पर गए और फिर उनका पता ही नहीं चला।

सर चार्ल्स किंग्सफोर्ड स्मिथ को दुनिया का सबसे बड़ा उड़ान-प्रेमी माना गया है और घोर मंदी के दिनों में अपने रूप में ऑस्ट्रेलिया को एक सच्चा बहादुर सपूत देने के लिए वे याद रखे जाते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945)

द्वितीय विश्वयुद्ध में, ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने मित्र-राष्ट्रों के साथ यूरोप, भूमध्य और उत्तरी अफ्रीका में जर्मनी के खिलाफ जंग लड़ी। उन्होंने दक्षिण-पूर्वी एशिया और पेसेफिक में भी जापान के खिलाफ जंग लड़ी।

उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तानों में, ऑस्ट्रेलियाई सैनिकों ने Tobruk शहर में जर्मनी और इटालियन सैनिकों द्वारा घेराबंदी को लम्बे समय तक रोके रखा, जो मिस्र पर जर्मनी के हमले की अंतिम प्रतिरक्षा पंक्ति थी। आठ लम्बे महीनों के लिए, इन पुरुषों (अधिकांशत: ऑस्ट्रेलियाई) ने घातक हमलों और कठिन स्थितियों का सामना किया, वे गुफाओं और हिमदरारों में रहे। उनकी दृढ़ता, बहादुरी और विनोद, व साथ ही उनके कमांडरों की आक्रामक योजनाएँ, युद्ध के कुछ सबसे गहन दिनों में प्रेरणा के स्रोत बन गई। ऐसा करने में, उन्हें 'Tobruk के चुहों' का नाम मिला।

1941 में, जापान ने पेसिफिक में युद्ध छेड़ दिया। ऑस्ट्रेलिया के पुरुष और महिला सौनिक पापुआ न्यू गिनी की रक्षा के लिए गए। ये काम नियमित सैनिकों और न्न्नबी रंगरुट सैनिकों को दिया गया जिन्हें अच्छे से प्रशिक्षण प्राप्त नहीं था। उन्होंने जंगल में दुश्मन के साथ जंग लड़ी, वहाँ ऊँचा कीचड़ वाला मार्ग था जिसे Kokoda ट्रैक कहते हैं। ऑस्ट्रेलियाई सैनिकों ने जापानियों को आगे बढ़ने से रोका। Gallipoli पर ऐनज़ैक कोव की तरह ही, Kokoda ट्रैक कुछ ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए एक तीर्थ यात्रा स्थल के समान बन गया है।

पापुआ के एक संवाहक द्वारा मदद प्राप्त करता कोकोडा ट्रैक पर एक घायल सैनिक

1942 में, जापानियों ने सिंगापुर में ब्रिटिश कैंप पर कब्ज़ा कर लिया। कैदी बनाए गए सैनिकों में लगभग 15,000 ऑस्ट्रेलियाई सैनिक

थे और उन्हें थाई-बर्मा रेलवे में काम करने के लिए ले जाया गया। इसके निर्माण-कार्य के दौरान, कई ऑस्ट्रेलियाई सैनिकों के साथ जापानियों ने क्रूरता भरा व्यवहार किया। हालाँकि ऑस्ट्रेलियाई युद्ध कैदियों ने एक दूसरे का पूरी तरह ध्यान रखा पर यहाँ 2700 से अधिक ऑस्ट्रेलियाई युद्ध

सर एडवार्ड 'वियरी' डनलप (1907–93)

सर एडवार्ड 'वियरी' डनलप एक बहादुर व दूसरों की परवाह करने वाले सर्जन और ऑस्ट्रेलिया के एक युद्धवीर थे. दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान, उन्हें अ जापानियों द्वारा कैद कर लिया गया तथा थाइ-बर्मा रेलवे पर काम करने के लिए बर्मा ले जाया गया। यह एक बहुत कठिन काम था।

एक कमांडर के रूप में वियरी अपने लोगों के प्रवक्ता बने रहे और एक सर्जन के रूप में वे उन्हें स्वस्थ करने में घंटों समय बिताते थे। कैम्प में उन्हें यातनाएं दी गईं मगर उनका सेवा-कार्य जारी रहा।

चिकित्सा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 1969 में उन्हें 'नाइट' की उपाधि दी गई। उनके मरने पर मेलबॉर्न की गलियों में 'रेलवे का सर्जन' नाम से जाने गए अपने इस वीर सपूत की अंत्येष्टि देखने के लिए 10.000 लोग कतार बांधे खड़े थे।

अन्य संघर्ष

दूसरे विश्व युद्ध के तुरंत बाद, 1950 से लेकर 1953 तक, ऑस्ट्रेलियाई सैन्य बलों को संयुक्त राष्ट्र के बहुराष्ट्रीय बल के भाग के तौर पर साउथ कोरिया को उतरी कोरिया के साम्यवादी बलों से रक्षा करने के लिए भेजा गया।

इसके कुछ समय बाद, ऑस्ट्रेलिया ने दक्षिणी वियतनामी सरकार का देश को फिर से एक करके वाले वियतनामी साम्यवादी बलों के खिलाफ समर्थन करने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका का साथ दिया। वियतनाम दुद्ध दूसरे विश्व युद्ध के बाद ऑस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी सैन्य बल वचनबद्धता रही है। 1962 से लेकर 1973 तक चलने वाला यह युद्ध, उस समय का सबसे लम्बा युद्ध था जिसे ऑस्ट्रेलिया ने लड़ा। यह एक विवादास्पद सहभागिता थी, कई ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने इसपर अपना विरोध करने के लिए गली-बाज़ारों में प्रदर्शन किया, और विशेषकर युवा ऑस्ट्रेलियाई पुरुषों को युद्ध में भर्ती करने पर विरोध किया।

ऑस्ट्रेलिया की प्रतिरक्षा सेना को पूर्वी तिमूर, इराक, सूडान एवं अफगानिस्तान के संघर्षों में शामिल होना पड़ा है तथा अफ्रीका, मध्य-पूर्व एवं एशिया-प्रशान्त क्षेत्र सहित दुनिया के अनेक हिस्सों में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र शांति-प्रयासों में भाग लिया है।

स्मृति-दिवस

ऐनज़ैक दिवस समारोहों के साथ-साथ स्मृति-दिवस भी वह दिन है जब ऑस्ट्रेलियाई लोग युद्ध में सेवा करते हुए शहीद हो जाने वाले व्यक्तियों को याद करते हैं। प्रत्येक वर्ष 11 नवम्बर (11वां महीना) के 11 बजे दिन में ऑस्ट्रेलिया के लोग ठहरकर उन स्त्री-पुरुषों के बलिदान को याद करते हैं जिन्हें युद्धों और संघर्षों की यातनाएं सहनी पड़ीं, जान से हाथ धोना पड़ा, या जिन्होंने अपनी सेवाएं दीं। इस दिन हम रेड पॉपीज पहनते हैं।

1900 के दशक के आरंभ में आव्रजन (माइग्रेशन)

पहले और दूसरे विश्व युद्ध की अवधि में, ऑस्ट्रेलिया में प्रवेश की सीमित शर्तों का बना रहना जारी रहा। परन्तु, लोगों के आप्रवास में वृद्धि हुई, विशेषकर दक्षिणी यूरोप के पुरुषों की। वे अपने साथ कई कौशल, शिक्षा और अपनी खुद की सांस्कृतिक मान्यताएँ लाए। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के ग्रामीण उद्योगों का विकास करने में सहायता की, और सड़कों व रेलवे का निर्माण किया। पत्थर की चिनाई करने वाले कुशल इतालवी कर्मियों ने सरकारी इमारतों और निवास-स्थानों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1930 के दशक के अंत तक यूरोप से यहूदी शरणार्थियों के आने का क्रम शुरू हो गया।. वे नाजी जर्मनी के खतरों से बच निकलना चाहते थे। वे जर्मनी, ऑस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और पोलैंड से यहां आए। इनमें से कई बहुत ही उच्च शिक्षित एवं प्रतिभाशाली थे जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के सांस्कृतिक जीवन में अपार योगदान दिया।

ऑस्ट्रेलिया आता हुआ एक यूरोपीय आप्रवासी

दूसरे विश्वयुद्ध में कैद किए गए करीब 18,000 इटैलियाई सैनिकों को ऑस्ट्रेलिया में युद्धबंदी शिविरों में रखा गया। हालाँकि इन शिविरो में वे बहुत ही कम दिन रहे मगर उनके साथ निष्पक्षता से व्यवहार किया गया और उनमें से कईयों ने इस भूमि और यहां के लोगों के बारे में बहतु -कछु जाना-समझा। युद्ध के बाद, उनमें से बहुत से लोग आप्रवासी के रूप में ऑस्ट्रेलिया लौट आए।

युद्धोत्तर शरणार्थी

युद्ध के बाद, अपनी आबादी बढ़ाने के लिए ऑस्ट्रेलिया अन्य यूरोपीय देशों से प्रवासियों को लाया।
लाखों लोग नाजी जर्मनी से भाग चले थे या अब सोवियत रूस के कब्जे में अपने गृहदेशों में लौटने में असमर्थ थे। ऐसे लगभग 170 000 बेघर हो चुके लोगों को ऑस्ट्रेलिया में स्वीकार किया गया ताकि वे एक नई जिन्दगी शुरू कर सकें।

ऑस्ट्रेलिया में कामगारों की भी सख्त कमी थी। उस समय की सरकार का यह मानना था कि जनसंख्या की वृद्धि देश के भविष्य के लिए अत्यावश्यक थी। 45 साल से कम आयु वाले स्वस्थ वयस्क प्रवासी £10 देकर ऑस्ट्रेलिया आ सकते थे और उनके बच्चे नि:शुल्क उनके साथ आ सकते थे। पर तब भी प्रवासी ब्रिटिश या यूरोपीयन राष्ट्रीयताओं वाले लोगों तक ही सीमित रखे गए थे।

स्नोवी पर्वत हाइड्रो-इलेक्ट्रिक योजना

1949 में, सरकार ने स्नोवी नदी के पानी के पूर्वी विक्टोरिया में समुद्र में प्रवाह करने से पहले इसकी संभाल करने के लिए बड़ी योजना पर काम करना शुरु किया। नदी के जल का मार्ग परिवर्तित करके सिंचाई तथा बिजली उत्पादन के लिए आंतरिक भूमि में बहने दिया गया। यह एक बहुत बड़ी परियोजना थी जिसे पूरा करने में 25 साल लग गए।

यह ऑस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग परियोजना है। साथ ही, यह दुनिया की सबसे बड़ी हाइड्रो-इलेक्ट्रिक योजनाओं में से एक है और इसकी पहचान विश्व के आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग अजूबों में से एक के तौर पर की जाती है।

स्नोवी पर्वत योजना Kosciusko National Park, New South Wales में स्थित है। इसके अंतर्गत 16 प्रमुख बांधें, सात ऊर्जा-केन्द्र, एक पम्पिंग स्टेशन तथा 225 किलोमीटर लम्बी सुरंग, पाइपलाइनें और जलवाहिकाएं हैं। इनमें से अधिकांश भूमिगत हैं।

योजना अंतर्देशीय न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया के खेतों में अहम पानी सप्लाई करती है। इसके ऊर्जा-केन्द्र न्यू साउथ वेल्स के लिए आवश्यक समस्त बिजली का 10 प्रतिशत उत्पादित करते हैं।

इस योजना पर काम की शुरुआत 1949 में हुई और 1974 में यह काम समाप्त हुआ। परियोजना में 30 देशों के 100,000 से अधिक लोगों ने काम किया। इन कर्मचारियों में से सत्तर प्रतिशत कर्मचारी प्रवासी थे। परियोजना के समाप्त होने पर, अधिकांश यूरोपीय कर्मचारी ऑस्ट्रेलिया में बने रहे, और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के बहुसांस्कृतिक समाज में अपना बहुमूल्य योगदान देना जारी रखा।

एक आत्मनिर्भर, बहुसांस्कृतिक एवं संसाधन-सम्पन्न देश के रूप में स्नोवी पर्वत योजना ऑस्ट्रेलिया की पहचान का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है.

आदिवासी एवं टॉरस स्ट्रटे द्वीपवासी लोगों के साथ व्यवहार।

1940 और 1950 के दशक में, आदिवासी और टोरस स्ट्रेट लोगों के प्रति सरकार की नीति उनका समावेश करने की थी। इसका यह अर्थ है कि आदिवासी और टोरस स्ट्रेट लोगों को उसी तरह से रहने के लिए कहा गया था जैसे गैर-जनजातीय आबादी रहती थी। ऐसा करना कारगर नहीं रहा क्योंकि वे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को गंवाना नहीं चाहते थे।

1960 के दशक में यह नीति एकीकरण की नीति में बदल गई. 1850 के दशक में ऑस्ट्रेलिया के ज्यादातर पुरुषों को मत डालने का अधिकार मिल गया था, किन्तु 1962 से पहले तक राष्ट्रमंडल मताधिकार सभी जनजातीय ऑस्ट्रेलियाई लोगों को प्राप्त नहीं हुआ था। इस एकीकरण के भाग के तौर पर, आदिवासी लोगों को नागरिक अधिकार दे दिए गए, किन्तु अभी भी उनसे यही अपेक्षा की जाती थी कि वे गैर-जनजातीय ऑस्ट्रेलियाई संस्कृति के अनुरूप रहें।

1967 में, 90 प्रतिशत से अधिक ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने एक इतिहासिक रेफरेंडम में 'हाँ' में मतदान किया जिसके फलस्वरुप आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों को ऑस्ट्रेलिया की पांच-वर्षीय जनसंख्या और आवास की गणना में शामिल किया जाना शुरु हुआ। इससे यह दर्शाया जाता है कि, उस समय, अधिकांश ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने यह सोचा कि आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों को हर किसी के समान अधिकार दिए जाने चाहिए।

समाज की मान्यताओं का यह विस्तार और प्रबल आदिवासी विरोध के कारण आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के संबंध में नीति-निर्माण के लिए एक मुख्य मार्गदर्शन सिद्धांत के तौर पर स्वाधीनता की शुरुआत हुई। सरकार ने आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के अपने खुद के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में अपने विचार प्रकट करने की महत्ता की पहचान की।

भूमि के अधिकारों को लेकर होने वाले विरोधों ने 1960 के दशक में जनता का ध्यान खींचा और नार्दर्न टेरेटरी में Wave Hill पर Gurindji हड़ताल हुई। Vincent Lingiari के नेतृत्व में आदिवासी पशुपालकों ने वेतन और काम करने के हालातों का विरोध करते हुए केटल स्टेशन पर अपनी नौकरियों पर हड़ताल कर दी। उनकी इन कार्यवाहियों से प्रेरित होकर Eddie Mabo और अन्य लोगों ने भूमि के अधिकारों की लड़ाई शुरु की।

1976 के आदिवासी भूमि अधिकार (नॉर्दर्न टेरेटरी) अधिनियम के अधीन, आदिवासी लोगों को आउटबैक ऑस्ट्रेलिया में भूमि के क्षेत्र दिए गए। 1990 के दशक के आरंभ में मैबो के उच्च न्यायालय के निर्णय एवं *नेटिव टाइटिल ऐक्ट 1993* में यह मान्यता दी गई कि जनजातीय लोगों का, उनके अपने पारम्परिक नियमों और परम्पराओं के आधार पर, जमीन पर दावा बनता था। यहां आज भी पारम्परिक समाज के पहलू मौजूद हैं. जनजातीय संस्कृति अभी भी फल-फूल रही है और वृहत्तर समाज द्वारा प्रशंसित है.

ऑस्ट्रेलिया का बढ़ता अनुपात नेटिव टाइटिल के निर्धारण के अंतर्गत आता है। इन क्षेत्रों में, परंपरागत समाज के पहलु जारी रहे।

मई 1997 में 'ब्रिन्गिंग देम होम' (उनकी घर-वापसी) रिपोर्ट ऑस्ट्रेलियाई संसद में पेश की गई. यह रिपोर्ट भारी संख्या में आदिवासी एवं टॉरस स्टेट द्वीपवासी बच्चों को उनके परिवारों से अलग किए जाने सम्बंधी एक जांच के प्रत्युत्तर में पेश की गई थी। इन बच्चों को 'चुरा ली गई पीढ़ी' के नाम से जाना गया. रिपोर्ट के परिणामस्वरूप हजारों ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने अपने इन जनजातीय बान्धवों के प्रति अपना समर्थन जताते हुए 1998 में प्रथम राष्ट्रीय 'क्षमा दिवस' पर एक पदयात्रा निकाली।

'चुरा ली गई पीढ़ी' से क्षमा-याचना (2008)

13 फरवरी 2008 को ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने सभी ऑस्ट्रेलियाई लोगों की ओर से बात करते हुए ऑस्ट्रेलिया की संसद में 'चुरा ली गई पीढ़ियों' से क्षमा मांगी। उन्होंने इस बात पर खेद जताया कि बीते हुए समय में ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के साथ इस तरह का व्यवहार किया गया था, और विशेषकर उस तरीके के लिए जिससे आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी बच्चों को उनके माता-पिता से अलग कर दिया गया था।

इस भाषण का प्रसारण टेलीविज़न और रेडियो स्टेशन पर किया गया। हज़ारों ऑस्ट्रेलियाई लोग इस 'क्षमा याचना' करने वाले भाषण को सुनने के लिए सार्वजनिक क्षेत्रों और अपने कार्यस्थलों में एकत्रित हुए। भाषण में आधिकारिक तौर पर पिछले अन्यायों को सूचीबद्ध किया गया और इनके लिए क्षमा मांगी गई। यह आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के घाव भरने की ओर और यह सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था कि ये अन्याय अब कभी दोबारा नहीं होंगे। 'क्षमा याचना' का भाषण सभी ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

स्काइराइटर सिडनी के आकाश पर 'सॉरी' (खेद है) लिखता हुआ

आज, ऑस्ट्रेलियाई पहचान में आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के बहुमूल्य योगदान का सम्मान किया जाता है और व्यापक तौर पर इसका जश्न मनाया जाता है। कई आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोग पूरे ऑस्ट्रेलियाई समाज में अग्रणी पदों पर हैं, इसमें न्यायिक प्रणाली, राजनीति, कला और खेलकूद शामिल हैं।

बहुसांस्कृतिक आप्रवास

1950 एवं 1960 के दशकों में एशियाई समुदाय, चर्च एवं सामाजिक समूहों सहित एक बढ़ते आंदोलन ने मिलकर 'श्वेत ऑस्ट्रेलिया' नीति समाप्त करने के लिए विरोध-प्रदर्शन किए।

1958 में सरकार ने श्रुतलेख परीक्षण हटा दिया और 1966 में, ऑस्ट्रेलिया ने चयनित गैर-यूरोपीय और कुशल एशियाई आप्रवास शुरु किया। अंतत:, हर कहीं ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने ऑस्ट्रेलिया के आप्रवास कार्यक्रम में सभी देशों को शामिल करने की महत्ता की पहचान की।

1973 में, 'श्वेत ऑस्ट्रेलिया' नीति समाप्त हो गई, और ऑस्ट्रेलिया बहुसंस्कृतिवाद के मार्ग की ओर चल पड़ा। इस समय से, सरकार ने आप्रवास के लिए सभी जातिय मानदण्ड हटा दिए। 1975 में वियतनाम युद्ध के बाद ऑस्ट्रेलिया ने बहुत भारी पैमाने पर एशियाई शरणार्थियों एवं आप्रवासियों को स्वीकार किया, जिनमें से अधिकांश वियतनाम, चीन और भारत से थे।

1945 से, कई लाख लोग ऑस्ट्रेलिया में रहने आए हैं, जिनमें युद्ध पीड़ित देशों से आने वाले शरणार्थी शामिल हैं। आज, ऑस्ट्रेलिया के प्रवासी पूरे विश्व भर से हैं।

ऑस्ट्रेलिया की समावेश को लेकर एक सक्रिय नीति है, जहाँ हर जाति, नस्ल या संस्कृति का हर व्यक्ति हमारे समाज का भाग बनना महसूस कर सकता है। यह नीति ऑस्ट्रेलियाई समाज के सभी पहलुओं में संचालन करती है, जिनमें सरकारी नीतियाँ शामिल हैं। इसे एर्ली चाइल्डुड (प्रारम्भिकल बाल्यकाल) से लेकर विश्वविद्यालय तक हमारे शैक्षिक पाठ्यक्रम में दर्शाया जाता है, और प्रत्येक कार्यस्थल में इसे अमल में लाया जाता है।

हर व्यक्ति को समानता के आधार पर और बिना किसी भेदभाव के व्यवहार पाने का हक ऑस्ट्रेलिया के मानवाधिकार आयोग एवं प्रत्येक राज्य एवं प्रदेश की सरकारों द्वारा संरक्षित है। नस्लीय भेदभाव की सार्वजनिक निन्दा की जाती है और वह कानून के अंतर्गत एक अपराध है।

ऑस्ट्रेलिया स्वीकृति और समरसता पर आधारित एक बहुसांस्कृतिक समाज बन गया है। यह एक ऐसा देश है जहां आप्रवासी, जनजातीय लोग एवं ऑस्ट्रेलिया में जन्में अन्य लोग शांतिपूर्वक अपने-अपने लक्ष्यों का स्वतंत्रतापूर्वक अनुगमन कर सकते हैं।

डॉ. विक्टर चांग (1936-1991)

डॉ. विक्टर चांग ऑस्ट्रेलिया के बेहतरीन हार्ट-सर्जनों में से एक थे. विक्टर पीटर चांग याम हिम का जन्म 1936 में चीन में हुआ था और वे 15 साल के उम्र में ही ऑस्ट्रेलिया आ गए थे.

उन्होने सिडनी के सटें विन्सटें हॉस्पीटल में काम किया, जहां 1984 में उन्होने ऑस्ट्रेलिया में हृदय-प्रत्यारोपण के प्रथम केन्द्र की स्थापना की। 1986 में विक्टर को 'कम्पिनयन ऑफ दि ऑर्डर ऑफ ऑस्ट्रिलया' बनाया गया।

विक्टर इस बात से परेशान रहते थे कि दाताओं की संख्या बड़ी कम है. इसलिए उन्होंने कृत्रिम हृदय बनाने का काम शुरू किया। 1991 में जबकि बड़े दुखद तरीके से उनकी हत्या कर दी गई, यह काम लगभग पूरा हो चला था।

उनकी स्मृति में एक नया शोधकेन्द्र खोला गया है. उन्हें उनकी विशेषज्ञता, आशावाद और नवप्रवर्तनशीलता के लिए स्मरण किया जाता है।

अल्बर्ट नैमत्जाइरा (1902-1959)

अल्बर्ट नैमत्जाइरा एक उत्कृष्ट ऑस्ट्रेलियाई कलाकार थे जिन्होंने ऑस्ट्रेलियाई भूदृष्यों की पेन्टिंग बनाने के बिल्कुल नए तरीके को खोजा। एक युवा ऐरर्न्ट पुरुष के रूप में अल्बर्ट ने पेन्टिंग के क्षेत्र में अपनी सहज प्रतिभा दिखलाई. हालांकि उन्हें बहुत ही कम औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था, किन्तु ऑस्ट्रेलिया के गांवों के बारे में बनाए गए उनके वाटरकलर चित्र बहुत ही लोकप्रिय हुए और बहुत ही जल्द सारे के सारे बिक गए।

वे और उनकी पत्नी ऑस्ट्रिलया के पहले आदिवासी मूल के व्यक्ति थे जिन्हें नागरिक बनने की अनुमति मिली। इसका मतलब यह था कि वे मत दे सकते थे, होटलो में प्रवेश कर सकते थे और जहां मर्जी हो वहां अपना घर बना सकते थे। अल्बर्ट को ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता मिल जाने से इस तथ्य पर प्रकाश पडा़ कि अन्य जनजातीय लोगों को ये अधिकार प्राप्त नहीं थे।

उनके जीवन से गैर-जनजातीय ऑस्ट्रेलियाई लोगों को नस्लवादी कानून की अनीति का ज्ञान हुआ और इससे आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के जीवन में परिवतर्न लाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

एड्डी मैबो (1936-1992)

एड्डी मैबो एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा जनजातीय लोगां के भूमि अधिकार के बारे में बोलने वाले प्रवक्ता थे। उनका जन्म मर्रे द्वीप पए हुआ था, जो कि टोरस स्ट्रेट के मेरियम लोगों की परंपरागत भूमि है।

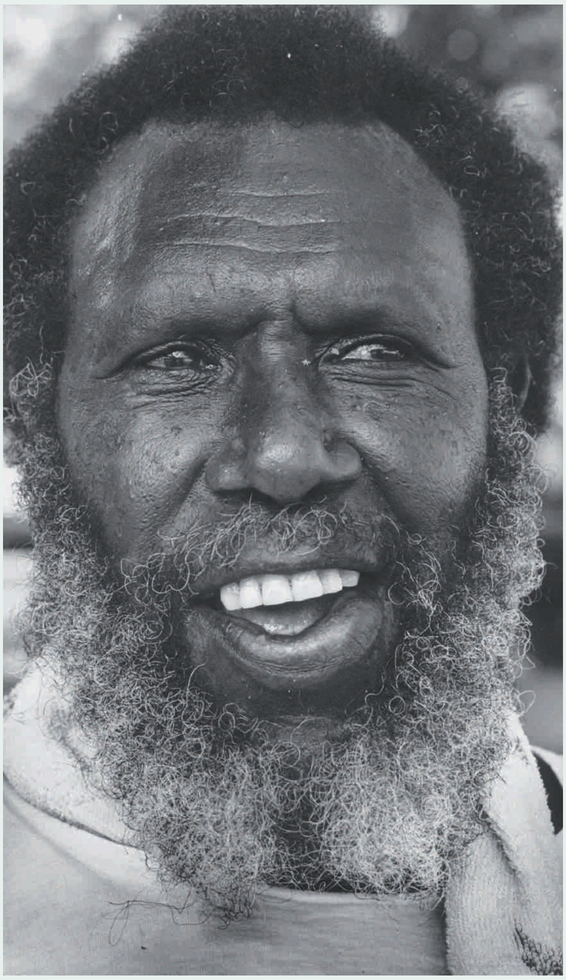

बचपन से ही उन्हें बता दिया गया था कि कौन से पेड़ और चट्टानें उनकी पारिवारिक भूमि की सीमा बांधती थीं।

बहुत वर्षों के बाद एड्डी को यह पता चला कि ऑस्ट्रेलियाई कानून के तहत उनकी जमीन 'क्राउन लैंड' मानी जाती थी और वह उनके परिवार की सम्पित्त नहीं थी। उन्होंने अपने क्रोध को एक क्रियात्मक रूप दे दिया और मुर्रे द्वीप के लोगों की ओर से कचहरी में अपना पहला परीक्षण मुकदमा पेश करने चल दिए।

कई सालों बाद 1992 में एड्डी ने उच्च न्यायालय में मुकदमा जीत लिया। मैबो न्यायालय के निर्णय में यह कहा गया कि यदि जनजातीय लोग यह साबित कर दें कि अपनी जमीन से उनका सतत पारम्परिक सम्बंध बना रहा था, तो अन्यरूपेण दावा न किए गए होने की स्थिति में वे उस भूमि पर स्वामित्व का दावा ठोक सकते थे। इस निर्णय के कारण बड़े पैमाने पर भूमियां उनके मूल स्वामियों को लौटा दी गईं.

एड्डी मैबो को उसके साहस तथा ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों के लिए भूमि का अधिकार हासिल करने के कारण याद रखा जाता है।

सारांश

इन पन्नों ने आपको हमारी ऑस्ट्रेलियाई गाथा की एक झलक दी है। हम ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता में आपका स्वागत करते हैं और अपने शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक देश में आपको पूरी तरह भागीदार बनने के लिए आमंत्रित करते हैं.

एक नागरिक के तौर पर, आप दूसरे ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों के समान जिम्मेदारियों और विशेषाधिकारों को साझा करेंगे, और ऑस्ट्रेलियाई समुदाय के संपूर्ण सदस्य के तौर पर अपना स्थान ग्रहण करेंगे। आप ऑस्ट्रेलिया के भविष्य को आकार देने में मदद करने की जिम्मेदारी को साझा करेंगे और हम उस राष्ट्रीय परियोजना में आपकी सक्रिय सहभागिता के लिए तत्पर हैं।

गैर-परीक्षणीय खंड की शब्दावली

राजदूत
वह व्यक्ति जो किसी देश का प्रतिनिधि हो या किसी कार्य को प्रोत्साहन दे

बोर्ड (मंडल)
निर्णय लेने के लिए चुने गए लोगों का समूह, जैसे यह कि किसी कम्पनी का संचालन कैसे किया जाए

बोर्डिंग स्कूल
वह स्कूल जहां छात्र निवास कर के पढ़ाई करते हैं और पूरी स्कूल-अवधि तक घर नहीं लौटते हैं.

बुश
ऑस्ट्रेलिया के ग्रामीन क्षेत्र जो अभी भी अपनी प्राकृतिक दशा में हैं

जन्तु केन्द्र (कैटल स्टेशन)
बड़ा फार्म जहां पशुओं का पालन-पोषण किया जाता है।

प्रारूप (चार्टर)
अधिकारों और दायित्वों के बारे में लिखित दस्तावेज

सामान्य आधार
अभिरुचि का साझा क्षेत्र

जब्री रंगरूट
वह सैनिक जो सेना में अपने मन से न आया हो, बल्कि युद्ध की स्थिति में उसे बहाल होना पड़ा हो

क्राउन लैंड
सरकार की भूमि

पाठ्यक्रम
अध्ययन कोर्स के विषय और मुद्दे

छरिद्र
जिसके पास धन न हो, न ही धन-प्राप्ति के उपाय

डिजरीडू [didgeridoo]
आदिवासी ऑस्ट्रेलियाई लोगों का एक वाद्ययंत्र जो लम्बी, खोखली लकड़ी से बना होता है

निष्पक्षता
नियमों का पालन करना और अनुचित लाभ न लेना; लोगों के साथ उचित और निष्पक्ष बर्ताव

शहीद सेवाकर्मी स्त्री-पुरुष
युद्ध या लड़ाई में मारे गए सेवाकर्मी स्त्री-पुरुष

निर्माण
निर्माण या सृजन करना

सकल घरेलू उत्पाद
किसी देश में साल-भर के अन्दर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य

गर्म हवा
बहुत ज्यादा गर्म मौसम, जो दिनों से ज्यादा टिके

अति राजद्रोह
एक गंभीर अपराध जिसमें सरकार की तख्तापलट करने की साजिश शामिल हो

प्रतीक-चिह्न
सुप्रसिद्ध और प्रतिनिधि छवि

प्रतीकात्मक जनजातीय चित्र
वह कला जो आदिवासी और टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों की विशिष्ट परिचायक और प्रतिनिधि हो

जनजातीय
ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी एवं/या टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोग

भूक्षेत्र
भूमि का बड़ा क्षेत्र

उपलब्धि
कोई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना

नेटिव टाइटिल
ऑस्ट्रेलिया की कानून-प्रणाली के अंतर्गत निर्णय किए गए अनुसार, जल और स्थल पर आदिवासी और टोरस स्ट्रेट लोगों के पारम्परिक अधिकार

मौखिक इतिहास
बीते हुए समय की घटनाओं के बारे में लोगों की मौखिक स्मृति

अग्रगामी
आरंभिक उपनिवेशियों में से एक, औपनिवेशिक आबादी के आरंभिक दिनों में किसी क्षेत्र में कामयाबी पाने वाला व्यक्ति

राजनीतिक प्रतिनिधित्व
संसद में किसी राजनेता के माध्यम से प्रतिनिधित्व

सजा
जज द्वारा फैसला लिया गया दण्ड, जैसे कि कारावास में समय बितानी की अवधि, उस व्यक्ति के लिए जिसे अपराध का दोषी पाया गया हो

वेतन-निर्धारण
यह तय करना कि कर्मचारियों को काम के एवज में कितनी मजदूरी मिलेगी

समाज सुधार
समाज में क्रांति के बदले नहीं बल्कि क्रमिक परिवर्तन द्वारा सुधार लाना

राज्य अंत्येष्टि
देश के लिए महत्वपूर्ण योगदान करने वाले व्यक्ति के सम्मान में सरकार द्वारा आयोजित अंत्येष्टि

कठघेरा
लकड़ी के खंभों आदि से बना प्रतिरक्षक घेरा

पशुपालक
जानवरों की देखभाल के लिए नियुक्त व्यक्ति

हड़ताल
जब कर्मचारी काम करना बंद कर देते हैं, उदाहरण के लिए, अपने वेतन या काम करने के हालातों के विरोध में

मताधिकार
लोक चुनावों में मत डाल सकने का अधिकार

शपथ-ग्रहण
औपचारिक समारोह द्वारा सरकारी विभाग के दायित्व-संचालन के लिए स्वीकार किया जाना

जीवन के क्षेत्र
सामाजिक अवस्थिति या पृष्ठभूमि, कार्य, पद

और अधिक जानकारी के लिए

ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता

ऑस्ट्रेलियाई नागरिक कैसे बनें, इसके बारे में और अधिक जानकारी के लिए www.citizenship.gov.au देखें।

ऑस्ट्रेलिया

आप ऑस्ट्रेलिया के बारे में और अधिक जानकारी अपने स्थानीय पुस्तकालय से प्राप्त कर सकते/सकती हैं। उपयोगी जानकारी इन वेबसाइटों से भी प्राप्त की जा सकती है:

- ऑस्ट्रेलिया के बारे मे www.australia.gov.au
- ऑस्ट्रेलिया : संक्षेप में www.dfat.gov.au

ऑस्ट्रेलिया सरकार के कार्यक्रम एवं सेवाएं

ऑस्ट्रेलिया सरकार के कार्यक्रमों और सेवाओं के बारे में और अधिक जानकारी के लिए www.australia.gov.au देखें

संघीय सांसद या सीनेटर

आपके राज्य या प्रदेश के स्थानीय सांसद या सीनेटर के पास ऑस्ट्रेलिया सरकार के कार्यक्रमों एवं सेवाओं के बारे में विस्तृत सूचनाएं उपलब्ध हैं.

सांसदों एवं सीनेटरों की सूची at www.aph.gov.au पर देखी जा सकती है।

ऑस्ट्रेलिया सरकार के संगठन

इस संसाधन पुस्तक में उल्लिखित ऑस्ट्रेलियाई सरकार के संगठनों के बारे में और अधिक जानकारी आप निम्नांकित वेबसाइटों से प्राप्त कर सकते/सकती हैं:

- ऑस्ट्रेलियाई प्रतिरक्षा सेना [Australian Defence Force] www.defence.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई निर्वाचन आयोग [Australian Electoral Commission] www.aec.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई संघीय पुलिस [Australian Federal Police] www.afp.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई मानव अधिकार आयोग [Australian Human Rights Commission] www.humanrights.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई खेल आयोग [Australian Sports Commission] www.sportaus.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई कर निर्धारण कार्यालय [Australian Taxation Office] www.ato.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई युद्ध स्मारक [Australian War Memorial] www.awm.gov.au
- ऑस्ट्रेलिया का रिज़र्व बैंक [Reserve Bank of Australia] www.rba.gov.au

गैर-सरकारी संगठन

इस संसाधन पुस्तक में उल्लिखित गैर-सरकारी संगठनों के बारे में और अधिक जानकारी आप निम्नांकित वेबसाइटों से प्राप्त कर सकते/सकती हैंः

- ब्रैडमैन फाउंडेशन ऑस्ट्रेलिया www.bradman.com.au
- हैमलिन फिस्च्युला www.hamlinfistula.org
- रॉयल फ्लाइंग डॉक्टर सर्विस ऑफ ऑस्ट्रेलिया www.flyingdoctor.org.au
- स्कूल ऑफ दि एयर www.schoolair-p.schools.nsw.edu.au
- स्नोवी पर्वत जल-विद्त प्राधिकरण www.snowyhydro.com.au
- दि फ्रेड हॉलोज फाउंडेशन www.hollows.org
- यूनेस्को विश्व धरोहर केन्द्र whc.unesco.org
- संयुक्त राष्ट्र www.un.org
- विक्टर चांग कार्डियक रिसर्च इंस्टीच्यूट www.victorchang.edu.au
- वॉलंटीयरिंग ऑस्ट्रेलिया www.volunteeringaustralia.org

अन्य

निम्नांकित विषयों पर और अधिक जानकारी के लिए निम्नांकित वेबसाइटों पर खोज करें :

- ऑस्ट्रेलियाई संविधान www.aph.gov.au
- ऑस्ट्रेलियाई ऑफ दि इयर एवार्ड्स www.australianoftheyear.org.au
- 'ब्रिन्गिंग देम होम' रिपोर्ट www.humanrights.gov.au
- राष्ट्रमंडल उद्यान एवं अभ्यारण्य www.environment.gov.au
- ऑनलाइन सुरक्षा www.esafety.gov.au
- घरेलू और पारिवारिक हिंसा समर्थन www.respect.gov.au, www.1800respect.org.au, www.dss.gov.au/women/help-is-here-campaign
- प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई लोग दि ऑस्ट्रेलियन डिक्शनरी ऑफ बायोग्राफी adb.anu.edu.au
- संसद के समक्ष पेश मौजूदा बिल (विधेयकों) की सूची www.aph.gov.au
- ऑस्ट्रेलिया की संसद www.aph.gov.au
- संसदीय शिक्षा सेवाएं www.peo.gov.au
- सार्वजनिक अवकाश www.australia.gov.au
- रेसिज़्म (नस्लवार) humanrights.gov.au
- ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी एवं टोरस स्ट्रेट द्वीपवासी लोगों से क्षमा याचना www.australia.gov.au

आभार

निम्नलिखित तस्वीरें कृषि, जल और पर्यावरण विभाग के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई:

पृष्ठ50 तस्मानियन विल्डरनेस

निम्नलिखित तस्वीरें गृह मामला विभाग के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई:

पृष्ठ5 में Albert Hall, Canberra आयोजित नागरिकता समारोह
पृष्ठ5 ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता का प्रमाण-पत्र
पृष्ठ11 स्मोकिंग समारोह, कैनबरा
पृष्ठ34 ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता समारोह, कैनबरा में शामिल एक परिवार

निम्नलिखित तस्वीरें ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं:

पृष्ठ51 भेड़ संपत्ति NSW में बच्चे – स्कूल ऑफ एयर, तस्वीरें 1962 में खींची गई (संदर्भ A1200:L42511)
पृष्ठ60 Dick Smith, सिविल एविएशन अथॉरिटी के चेयरमेन, 1991 (संदर्भ: A6135:K23/5/91/1)
पृष्ठ65 न्यू हॉलैंड का एबल तस्मान [Abel Tasman], द्वारा खींचा गया नक्शा, 1644 (संदर्भ A1200:L13381)
पृष्ठ68 1851 में ऑस्ट्रेलिया में गोलड रश की इतिहासिक तस्वीर (संदर्भ A1200:L84868)
पृष्ठ70 आउटबैक ऑस्ट्रेलिया में 'अफगान' ऊँटवाले (संदर्भ: A6180:25/5/78/62)
पृष्ठ77 1986 में अपने कार्यालय में Sir Edward 'Weary' Dunlop (संदर्भ: A6180:1/9/86/12)
पृष्ठ78 ऑस्ट्रेलिया आता हुआ एक यूरोपीय आप्रवासी, Cairns में Flaminia पर इतालवी गन्ना काटनेवाले, 1955 (संदर्भ: A12111:1/1955/4/97)

निम्नलिखित तस्वीरें ऑस्ट्रेलिया कके राष्ट्रीय पुस्तकालय के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई हैं:

पृष्ठ53 1940 के दशक में प्रकाशित Judith Wright का चित्र (संदर्भ: nla.pic-an29529596)
पृष्ठ64 27 जनवरी 1788 को सिडनी कोव में पहला बेड़ा, John Allcot 1888 – 1973 द्वारा निर्माण किया गया (संदर्भ: nla.pic-an7891482)
पृष्ठ65 Thomas Fairland 1804 – 1852 द्वारा प्रकाशित Caroline Chisholm का चित्र (संदर्भ: nla.pic-an9193363)
पृष्ठ70 1890 के दशक में प्रकाशित Catherine Helen Spence का चित्र (संदर्भ: nla.pic-an14617296)
पृष्ठ73 John Simpson Kirkpatrick और उसका गधा, Gallipoli, 1915 (संदर्भ: nla.pic-an24601465)
पृष्ठ74 1919 और 1927 के बीच प्रकाशित Sir Charles Edward Kingsford Smith का चित्र (संदर्भ: nla.pic-vn3302805)
पृष्ठ80 1946 या 1947 में Arthur Groom द्वारा Hermannsburg Mission, Northern Territory,पर प्रकाशित Albert Namatjira का चित्र (संदर्भ: nla.pic-an23165034)

निम्नलिखित तस्वीरें के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई हैं।

मुख्य पृष्ठ Mimosa स्प्रिंग फूल, ©iStockphoto.com/ST-art (संदर्भ: 1135566007)
पृष्ठ6 Lucky Bay, Western Australia में कंगारु माँ और उसका बच्चा, ©iStockphoto.com/NeoPhoto (संदर्भ: 1142608453)
पृष्ठ9 Lake Hume, Victoria, ©iStockphoto.com/tsvibrav (संदर्भ: 675826394)
पृष्ठ15 ऑस्ट्रेलियाई काला ओपल, ©iStockphoto.com/Alicat (संदर्भ: 173691056)
पृष्ठ17 ऑस्ट्रेलियाई ध्वज, ©iStockphoto.com/davidf (संदर्भ: 471630390)
पृष्ठ19 प्राथमिक स्कूल की लड़िकयों का बहु-जातिय समूह, ©iStockphoto.com/FatCamera (संदर्भ: 877714382)
पृष्ठ23 ऑस्ट्रेलियाई संसद भवन, कैनबरा, ©iStockphoto.com/felixR (संदर्भ: 157193181)

पृष्ठ33 लोगों का समूह, ©iStockphoto.com/davidf (संदर्भ: 913541808)

पृष्ठ36 भूमि कर और न्याय का तराजू, ©iStockphoto.com/studiocasper (संदर्भ: 1004781908)

पृष्ठ37 विविध समूह, ©iStockphoto.com/SolStock (संदर्भ: 1203934273)

पृष्ठ39 Green Wattle Creek fire NSW, ऑस्ट्रेलिया, दिसम्बर 2019, ©iStockphoto.com PetarBelobrajdic (संदर्भ: 1198579743)

पृष्ठ47 हाथ से पेंट किए डिगरीडू, ©iStockphoto.com/lore (संदर्भ: 185011099)

पृष्ठ48 Bondi Beach, सिडनी, ©iStockphoto.com/Edd Westmacott (संदर्भ: 91095176)

पृष्ठ49 सिडनी ओपरा हाउस, न्यू साउथ वेल्स, ©iStockphoto.com/slowstep (संदर्भ: 607986870)

पृष्ठ50 Uluru-Kata Tjuta नेशनल पार्क, नॉर्दर्न टेरेटरी, ©iStockphoto.com/bennymarty (संदर्भ: 1184425004)

पृष्ठ63 Uluru, Northern Territory, ©iStockphoto.com/simonbradfield (संदर्भ: :539027478)

पृष्ठ64 आदिवासी चट्टान कला – Saratoga फिश, ©iStockphoto.com/Alpen Gluehen (संदर्भ: 2761924)

पृष्ट्ग75 ऑस्ट्रेलियई युद्ध स्मारक की दीवारें, कैनबरा, ©iStockphoto.com/ Matt Palmer (संदर्भ: 1125736631)

निम्नलिखित तस्वीरें Shutterstock के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई:

पृष्ठ7 Homeground उत्सव, सिडनी में जनजातीय नृतक, ©shutterstock.com/PomInOz (संदर्भ: 345113882)

पृष्ठ21 मतदाता, ©shutterstock.com/Nils Versemann (संदर्भ: 446229916)

पृष्ठ31 ऑस्ट्रेलियाई उच्च न्यायालय, ©shutterstock.com/Greg Brave (संदर्भ: 1051621895)

सभी अन्य तस्वीरें निम्नलिखित संगठनों/लोगों के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई हैं:

पृष्ठ24 ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रमंडल का संविधानिक अधिनियम 1900: मूल लोक अभिलेख प्रति, Gifts Collection, संसद भवन कला संग्रहण, संसदीय सेवाएँ विभाग, कैनबरा ACT के सौजन्य से तस्वीर

पृष्ठ40 ऑस्ट्रेलियाई अंटार्कटिक डिवीजन ©ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रमंडल के सौजन्य से Heard द्वीप और McDonald द्वीप की तस्वीर, फोटो L. E. Large द्वारा खींची गई (संदर्भ: 1892A2)

पृष्ठ52 ब्रेडमैन म्यूज़ियम ऑफ क्रिकेट के सौजन्य से Sir Donald Bradman की तस्वीर Sir Donald Bradman अपनी ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टोपी पहने हुए और यह तस्वीर 1931-32 के ऑस्ट्रेलियाई सीज़न के दौरान ली गई थी

पृष्ठ54 Dr Fiona Wood AM, National Australia Day Council के सौजन्य से चित्र

पृष्ठ55 Professor Fred Hollows की तस्वीर Fred Hollows Foundation के सौजन्य से, यह तस्वीर Frank Violi द्वारा खींची गई थी

पृष्ठ56 Dr James Muecke AM, Australian of the Year Awards के सौजन्य से चित्र

पृष्ठ56 Professor Michelle Simmons, National Australia Day Council के सौजन्य से चित्र

पृष्ठ61 Dr Catherine Hamlin AC की तस्वीर Hamlin Fistula राहत और सहायता फंड के सौजन्य से

पृष्ठ71 Lord Lamington 1901 में ब्रिसबेन में फेडरेशन दिवस की भीड़ को संबोधित करते हुए, तस्वीर State Library of Queensland के सौजन्य से, फोटो H.W. Mobsby द्वारा खींची गई थी (संदर्भ: 47417)

पृष्ठ72 Edith Cowan, National Museum of Australia के सौजन्य से चित्र

पृष्ठ73 Dorothea Mackellar, State Library of NSW के सौजन्य से चित्र

पृष्ठ76 State Library of New South Wales (Mitchell Library)के सौजन्य से सूप किचन की तस्वीर। स्कूली बच्चे नि:शुल्क में सूप और ब्रेड स्लाइस लेने के लिए पंक्ति में खड़े हुए, Belmore North Public School, NSW, 2 अगस्त 1934, फोटो द्वारा खींची गई (संदर्भ: H&A 4368)

पृष्ठ77 ऑस्ट्रेलियाई युद्ध स्मारक के सौजन्य से ट्रैक पर चोटग्रस्त सैनिक का चित्र (संदर्भ:014028)

पृष्ठ81 Bernita और Gail Mabo की अनुमति से Eddie Mabo की दोबारा तैयार की गई तस्वीर

पृष्ठ82 विक्टर चांग कार्डियक रिसर्च इंस्टीच्यूट के सौजन्य से डॉकतर विक्टर चांग की तस्वीरे

टिप्पणियाँ